

# इन्दु से हिन्दू

नेक भारतीय, चीनी, ईरानी, ग्रीक, अंग्रेज, लेखकों का परामर्श लेकर, भारतीयों के राष्ट्रीय संघोधन 'हिन्दू' की 'इंदु' (-इन्द्र) शब्द से वास्तविक व्युत्पत्ति

ग.वा. कवीश्वर

समें 'हिन्दू' शब्द को विदेशी ईरानियों द्वारा न दिया हुआ बतलाते हुए, 'इन्दु' अर्थात् इन्द्र अर्थात् सर्वश्रेष्ठ सिद्ध कर, राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा की है। इसके लिये लेखक करोड़ों भारतीयों के हृदय की शुभकामना और धन्यवाद प्राप्त करने के अधिकारी है। अस्तक भारतीय साहित्य की अनमोल निधि है, पठनीय एवं संग्रहणीय है।"

- 'साहित्य समीक्षा' 'दिव्ययुग' पत्रिका, इंदौर, मई 2003



डॉ. श्री ग. वा. कवीश्वर  
गरीबार कर्मून त्याच्या स्मरणार्थ  
संस्मृत  
पुस्तक दिनांक 24-07-2008

# “दण्ड से हिण्डू”

लेखक  
ग.वा. कवीश्वर

DR. P. G. KAVEESHWAR  
B-38 M. I. G. INDIRA COLONY  
BUBHANPUR (M.P.)

(‘हिन्दू’ संबोधन की व्युत्पत्ति पर तर्कसंगत खोजपूर्ण विवेचन)

ग.वा. कवीश्वर

लेखक 'गीतात्वमीमांसा', 'महाभारत के गूढ़ रहस्य'.

## द्वितीय संस्करण

2003



हमारे राष्ट्रीय संबोधन 'हिन्दू' के विषय में बहुप्रचलित धारणा है कि, यह नाम इस्लाम पूर्व ईरानीयों ने, पश्चिम भारत की 'सिंधु' नदी के नाम का 'हेंदू', 'हिंदू' उच्चार कर, भारतीयों को प्रयुक्त किया, जो संपूर्ण भारत वर्ष में देश के लिये, तथा धर्म के भी लिये, स्वीकृत हो गया।

यह धारणा विदेशी विद्वानों के अलावा, स्वयं भारत में भी दृढमूल होकर, इसमें हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान की अवहेलना होती है इसका कोई ख्याल न करते, उसका प्रचार किया जाता है।

इस अत्यंत अपमानास्पद धारणा का यहां समूल निराकरण कर प्रतिपादन किया है कि, भारतीय आर्यों का यह 'हिन्दू' संबोधन भारत में ही ईदु' शब्द का प्राकृत उच्चार होकर स्वयं भारतीयों ने धारण किया हुआ है। यह विवेचन पढ़ने में सुलभता हो इस हेतु उसमें प्रस्थापित प्रमुख निष्कर्षों का यहाँ उल्लेख करता हूँ; इन्हें ध्यान में रखकर समग्र विवेचन पढ़ना पूर्ण सुसंगत प्रतीत होगा।

प्राचीन ईरानी अवेस्ता भाषा में भारतीय संस्कृत के कुछ शब्द 'स' का 'ह' उच्चार कर समाविष्ट किये गये थे - उदाहरणार्थ सेना = हैना, सप्त = हप्त। इसी प्रकार संस्कृत 'सिंधु' शब्द अवेस्ता भाषा में 'हेंदू', 'हिंदू' हुआ। किन्तु इसमें मूल 'सिंधु' शब्द एक नदी इस सामान्य अर्थ का ही होकर, उसका पश्चिम भारतीय विशिष्ट 'सिंधू' नदी या 'सिन्धू प्रदेश' ऐसा आशय नहीं था। ईरानियों ने वह शब्द उन्हीं के देश की नदियों के लिये प्रयुक्त किया। इसका ख्याल रखकर तत्कालीन ईरानी लेखों पर विचार करना चाहिये।

इधर भारत के प्राचीन आर्यों ने स्वयं के लिये 'इन्दु' यह एक अतिरिक्त संबोधन धारण किया, जिसका अर्थ नक्षत्रपति चन्द्र होकर सर्वश्रेष्ठता सूचित करता है। उसी का समाज में प्राकृत रूपांतर 'हिन्दू' हुआ, जो लोकप्रिय होकर देश एवं धर्म के लिये भी प्रचलित हुआ। उस शब्द का भारत की विशिष्ट सिंधू नदी से कोई खास संबंध नहीं।

इसी संदर्भ में एक और महत्त्व की बात यह है कि, प्राचीन ईरानीयों ने 'सिंधू' से बना 'हिन्दू' शब्द उनकी बोली में भारतीयों के लिये प्रयुक्त किया था ऐसा क्षणभर चर्चा हेतु माना, तो भी वह संबोधन अत्यंत विशाल, पूर्ण सुसंस्कृत, स्वतंत्र, स्वाभिमानी, भारतीय समाज को स्वीकार करवाने के लिये प्रवृत्त करने की सांस्कृतिक महत्ता, या बाध्य करने की राजकीय एवं सैनिक क्षमता, ईरानीयों की कभी भी नहीं थी।

ग.वा. कवीश्वर

इन्दु से हिन्दू

प्रकाशक : ग.वा. कवीश्वर  
बी-38, इंदिरा कॉलोनी, बुरहानपुर (म.प्र.) 450331

टाइपसेंटर : टू टेज़ कम्प्यूटर्स  
सराफा, जबलपुर

मुद्रक : अप टू डेट प्रिंट मीडिया  
गोल बाजार, जबलपुर ☎ : 0761-2318280

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

मूल्य : साठ रुपये

इन्दु से हिन्दू

III



इस लेखक की कुछ अन्य रचना

## महाभारत के गूढ रहस्य (संशोधित वर्धित द्वितीय संस्करण) महाभारताची गूढ रहस्ये (मराठी)

(संशोधित द्वितीय आवृत्ति)

इसमें महाभारत के सदियों से अगम्य कूट स्थलों का संपूर्ण स्पष्टीकरण किया होकर, अनेक प्रचलित भ्रामक धारणाओं का खंडन है।

“विश्व संस्कृति में एक महत्वपूर्ण योगदान” – विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।

“वस्तुतः आप जानते हैं महाभारत को” – प्रधानमंत्री, अखिल भारत पंडित परिषद, वाराणसी।

“महाभारत की रचना के बाद ऐसा महान कार्य कोई भी व्यक्ति या संस्था से संभव नहीं हुआ। महाभारत संबंधी कूट रहस्य भेदन के लिये परमात्मा ने आपको चुना” – पं. मुरलीधर हरिहरनो, अध्यक्ष, प्राच्य विद्या शोध मंडल, रायपुर; अध्यक्ष, भारतीय ज्योतिष परिषद, राजनंदगाँव।

“आपके वैदुष्य पूर्ण व्याख्यानों से श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (दिल्ली) गौरवान्वित हुआ है। आपके मन्तव्य विस्तार के साथ विद्वन् समूह के सामने आनेसे ..... अब तक की उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझ जायेंगी। पाश्चात्य विद्वानों की भी आँखें खुलेंगी। महाभारत के असंलग्न श्लोकों का तात्पर्य भी स्पष्ट होगा” – महामहोपाध्याय पं. परमेश्वरानंद शास्त्री, विद्याभास्कर (दिल्ली)।

“महान शोधकार्य। आप जैसे विद्वानों से विक्रम विश्वविद्यालय विशेषतः और भारतवर्ष सामान्यतः गौरवान्वित हो रहा है” – डॉ. शिवमंगल सिंह, उज्जैन।

“व्यासो वेत्ति शुको वेत्ति वेत्ति चार्यं कवीश्वरः। रहस्यं व्यास कूटानां तुरीयो वेत्ति वा न वा ॥” – पंडित उपेन्द्रनाथ राय, शास्त्री, मेटेरी (जलपैगुडी), पश्चिम बंगाल।

“आपने इस विषय पर जो नया प्रकाश डाला है वह सर्वथा उपादेय है” – डॉ. संपूर्णानंद, भूतपूर्व मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश।

“आचार्य ग. वा. कवीश्वर ने महाभारत के युद्ध विषयक वचनों का सूक्ष्म अध्ययन कर वे सब सुसंगत है यह सिविस्तार बताया है। यह प्रथम विस्तारपूर्वक प्रतिपादन करने

तिथि, भीष्म निधन तिथि) बदलना पड़ेगी” – (मराठी में) महामहोपाध्याय डॉ. वा. वि. मिराशी, नागपुर।

“भारतीय वाङ्मय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान.... इसमें प्रखर विचारक एवं शोधकर्ता श्री ग. वा. कवीश्वर के गहन अध्ययन की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। भारतीय संस्कृति में निष्ठावान व्यक्ति इस रचना को अवश्य पढ़ें। महाभारत की विभिन्न घटनाओं की तिथियों का कालनिर्णय अत्यन्त सावधानी पूर्वक किया गया है। अनेक भ्रान्त धारणाओं का अन्त हुआ है। पुस्तक भारतीय साहित्य की अनमोल निधि है” – ‘साहित्य समीक्षा’, “दिव्ययुग” पत्रिका, इन्दौर।

“महाभारत की युद्ध तिथियों पर सार्थक, युक्तियुक्त व सर्वोत्तम प्रकाश.... ‘गीता जयन्ती तिथि’, ‘भीष्म निधन तिथि’ आदि बदलनी पड़ेगी..... महाभारत का अत्यन्त गहराई से अध्ययन ..” – पुस्तक समीक्षा, “सत्युग की वापसी” पत्रिका, अलवर (राजस्थान)।

## गीतातत्व मीमांसा गीतातत्त्वदर्शन (मराठी)

अनेक पुरातन एवं आधुनिक भाष्यकारों का चिकित्सक परामर्श लेकर, गीतारंभ समय अर्जुन की वास्तविक समस्या एवं श्रीकृष्ण ने दिया दार्शनिक उपदेश का, पाश्चिमात्य नीतिदर्शन शास्त्र से तुलना के साथ, विस्तृत स्पर्हीकरण।

## Ethics of the Gita

“गीतातत्व मीमांसा” का अंग्रेजी संस्करण (डॉ. राधाकृष्णन द्वारा प्रशंसात्मक Introduction)।

## Law of Karma

पुणे विश्वविद्यालय के आमंत्रण पर दिये व्याख्यान।

## The Metaphysics of Berkeley

“An achievement of unusual merit.... He has a sound faculty of philosophical discrimination.... his nicely balanced criticism and appreciation of Berkeley.... outstanding philosophical merits of Mr. Kaveeshwar's work” - *London Times*. “....admirable exposition ....I respect the achievement” - *The philosophy journal*, London. “Scholarly study of Berkeley's metaphysics” - British philosopher C.E.M. Joad.



प्रकरण १ : प्रचलित धारणा

१-८

क्या भारत का 'हिन्दू' नाम 'सिंधू' का ईरानी उच्चार है? क्या भारत विदेशी नाम स्वीकार करता? भारत में 'सिंधू' का 'हिन्दू' रूपान्तर नहीं हुआ।

प्रकरण २ : प्राचीन चीनी उल्लेख

१-१८

यूएन च्वांग का यात्रा वृत्तांत. भारत का एक अन्य नाम 'इंदु'. 'इंदु देश' का स्पष्ट उल्लेख. भारत के लिये चीनी नाम के मूल में संस्कृत 'इंदु' शब्द. भारत को 'इंदु' क्यों कहते थे?

प्रकरण ३ : ईरानी अवेस्ता का 'हिन्दू' शब्द भारत के लिए नहीं था

११-२८

ऋग्वेद का 'सप्तसिंधु'. झेंद अवेस्ता के 'हप्तहिन्दू' का वास्तविक आशय. झेंद अवेस्ता के पाठ में कुछ अतिरिक्त शब्द. भारतीय महिलाओं का अपमान. मूलभूत शाब्दिक घोटाला. भारत से गलत संबद्ध किये कुछ अन्य वचन।

प्रकरण ४ : दारियस के शिलालेख

२१-३७

पर्सपोलिस का शिलालेख. हेरेडोटस का 'इतिहास'. 'हप्तहिन्दू' तथा 'हिंदुस' का संबंध भारत से न होने के स्पष्ट संकेत।

प्रकरण ५ : प्राचीन भारत के दो सिंधु प्रदेश

३८-४२

Chang Chen का 'Shen-tu' देश कौनसा था? महाभारत का द्वितीय सिंधु राज्य. जयद्रथ के सिंधु राज्य के बारे में भ्रम।

प्रकरण ६ : 'इंदु' से हिन्दू (तथा इंडो-इंडिया)

४३-६०

ई चिंग (I-Tsing/I-ching) का वृत्तांत. कुछ भारतीय विद्वानों का प्रतिपादन. किसने किसे प्रभावित किया? विरोधी तर्क को अंतिम मोड़. अल बेरूनी का प्रमाण. भाषिक रूपान्तरित शब्द. अंत में-

सूचि (उल्लेखित लेखन एवं लेखक)

६१-६४

क्या भारत का 'हिन्दू' नाम 'सिंधू' का ईरानी उच्चार है ?

भारत देश का 'हिन्दुस्थान' भी एक बहुत लोकप्रिय नाम है; यह कैसे प्रचार में आया ?

इस विषय में व्यापक प्रचलित धारणा यह है कि, प्राचीन ईरानियों ने भारतीयों के लिये 'सिंधु' शब्द से ('स' का 'ह' तथा 'घ' का 'द' उच्चारण कर) 'हिन्दू' नाम तैयार किया। इस कल्पना के दो वैकल्पिक स्पष्टीकरण दिये जाते हैं। एक यह कि, ईरानियों ने पश्चिम भारत की 'सिंधु' नदी के उस पार (यानी पूर्व किनारे पर), तथा उसके आसपास, रहने वाले लोगों को 'हिन्दू' कहा। दूसरा स्पष्टीकरण यह दिया जाता है कि, भारत के वैदिक आर्यों ने (विशेषतः ऋग्वेद में) अपने निवासीय प्रदेश को 'सप्तसिंधू' (सात सिंधुओं का यानी नदियों का प्रदेश) कहा, जिसे ईरानियों ने अपनी अवेस्ता भाषा में 'हप्तहिंदू' रूपान्तरित कर भारत को वैसा संबोधित किया; तथा बाद में उसका 'हिन्दू' संक्षेप होकर वह नाम भारतीयों को दिया गया।

ये दो स्पष्टीकरण परस्पर सुसंगत नहीं हैं। यदि 'हिन्दू' नाम 'हप्तहिंदू' का संक्षेप हो, तथा 'हप्तहिंदू' शब्द वैदिक 'सप्तसिंधू' का अवेस्ता रूपान्तर हो, तो भारतीयों के लिये प्रयुक्त 'हिन्दू' नाम का विशिष्ट 'सिंधु' नदी से संबंध नहीं होगा।<sup>१</sup> और यदि ईरानियों ने 'हिन्दू' नाम विशिष्ट 'सिंधु' नदी के नाम से ही तैयार किया हो, तो उसका ऋग्वेद के 'सप्तसिंधू' प्रदेश से विशेष संबंध नहीं होगा। फिर भी ये दोनों स्पष्टीकरण किसी प्रकार एक दूसरे में मिलाकर कहा जाता है कि, ईरानियों ने भारत के लिये तैयार किया 'हिन्दू' नाम, न केवल अन्य देशों में (Indo-Indica-Inde-India रूपान्तरों के साथ), अपितु स्वयं इस विशाल भारत देश में भी सर्वप्रचलित हो गया। इस धारणा के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा (वाराणसी) द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द सागर' (खंड ११) में कहा है -

“'हिन्द' शब्द वास्तव में 'सिंधु' शब्द का फारसी उच्चारण है।... ईसा के ५०० वर्ष पहले दारा (दारय बहू) प्रथम के समय में सिंधु नदी के आसपास के प्रदेश पर पारसियों का अधिकार हो गया था। प्राचीन पारसी भाषा में संस्कृत के 'स' का उच्चारण 'ह' होता था।... इसी नियम के अनुसार 'सिंधु' का उच्चारण प्राचीन पारस देश में

१. बल्कि ऋग्वेद का सायन भाष्य (आगे उद्धृत) उन 'सात नदियों' में विशिष्ट सिंधु नदी का नाम समाविष्ट भी नहीं करता है।



है जो वेदों में भी 'सप्तसिंधु' के नाम से आया है। धीरे-धीरे 'हिंद' शब्द सारे देश के लिये प्रयुक्त होने लगा। प्राचीन युनानी जब फारस आए, तब उन्हें इस देश का परिचय हुआ और वे अपने उच्चारण के अनुसार फारसी 'हिंद' को 'इंड' या 'इंडिका' कहने लगे, जिससे आजकल 'इंडिया' शब्द बना है"। स्वाभाविक ही इस ग्रंथ में 'हिन्दु' के लिये कहा है। "यह नाम प्राचीन पारसियों का दिया हुआ है जो उनके द्वारा संसार में सर्वत्र प्रचलित हुआ।"

‘भारतीय संस्कृति’ (लेखक शिवदत्त ज्ञानी) (अध्याय 3) में कहा है—

“हिन्दु शब्द का जन्म सिंधु शब्द से होता है। आधुनिक पारसियों के पूर्वज, जो कि ईरान देश में बसे थे, भारतीय आर्यों को 'हिन्दू' नाम से ही जानते थे। वे स्वतः भी आर्य थे तथा भारतीय भी आर्य थे। इसलिए कदाचित् उन्होंने भारतीयों को 'हिन्दु' नदी के पारवर्ती आर्य या 'हिन्दु आर्य' कहकर हिंदू नाम को उपयुक्त किया होगा। ..... प्राचीन ईरान निवासी संस्कृत 'स' से स्थान में 'ह' का उच्चारण करते थे... इस प्रकार प्राचीन ईरानियों ने सर्वप्रथम हमारे लिए 'हिन्दू' शब्द प्रयुक्त किया। उनके धर्मग्रंथ अवेस्ता (वेन्दिदाद) में इन सब बातों का स्पष्ट उल्लेख है.... प्राचीन अरब के निवासी भी हमें 'हिन्दु' व हमारे देश को 'हिन्द' कहते थे।... इसी प्रकार मुसलमानों ने भी भारतीयों को 'हिन्दू' तथा भारतवर्ष को 'हिन्द' अथवा 'हिन्दोस्तान' नाम से संबोधित किया... भारतीय समाज अपनापन खोकर इनसे प्रभावित हुआ व उसने 'हिन्द', 'हिन्दुस्थान' आदि नाम अपना लिए... 'हिन्दु' तथा 'हिन्दुस्थान' नाम मुस्लिम आक्रमणों के पश्चात् भारतीय साहित्य तथा बोलचाल में प्रचलित हुये... ये नाम भारतीयों की मानसिक दासता से सूचक हैं और यह दासता राजनीतिक दासता से ही उत्पन्न होती है।... किन्तु भारतीयों को चाहिये कि वे अपने प्राचीन नामों को अपनाये... राष्ट्रीय भावना की जागृति इन्हीं प्राचीन नामों से ही हो सकती है, न कि विदेशियों द्वारा दिये गये 'हिन्दु' आदि नामों से।"

राधाकुमुद मुखर्जी ('हिन्दु सभ्यता', पृ. 59) लिखते हैं, "पुराने समय में विदेशी लोग भारत को उसके उत्तर-पश्चिम में बहने वाले महानद सिंधु के नाम से पुकारते थे, जिसे ईरानियों ने हिन्दु और यूनानियों ने ह कार लोप करके 'इण्डोस' कहा"। इसी प्रकार वेद मेहता लिखते हैं -

"The word 'Hindu' was first used by Persians who invaded northwestern India in the sixth century B.C., and they applied it to the Sanskrit-speaking people they found living by the Indus river, which in Sanskrit is called the Sindhu and which the Persians called the Hindu". ('A Portrait of India', New York, 1970). ['हिन्दी अनुवाद - 'हिन्दु शब्द का सर्वप्रथम उपयोग ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर पश्चिम भारत पर आक्रमण करने वाले ईरानियों ने किया, तथा वह उन्होंने इण्डस नदी, जिसे संस्कृत में सिन्धु कहते हैं एवं

‘भारतीय संस्कृति कोश’ (मराठी, खण्ड 10) ‘हिन्दू समाज’ के स्पष्टीकरण में कहता है, ‘पंजाब में सात नदियाँ बहती हैं, उस पर से पंजाब को सप्तसिंधु प्रदेश यह नाम प्राप्त हुआ। आर्य इस प्रदेश में बसे; अतः पश्चिम के लोग उन्हें भी सप्तसिंधु कहने लगे। पारसियों के अवेस्ता में उसका उल्लेख हप्तहिन्दू ऐसा है। सप्तसिंधु के पूर्व और के प्रदेश के लोगों को पश्चिमीय लोग हिन्दू नाम से जानने लगे।’

सावरकर प्रतिपादन करते हैं कि 'हिन्दू' नाम से भारतीयों को इस्लामपूर्व ईरानियों ने संबोधित किया, जो 'सिंधु' का रूपान्तर है। "Essentials of Hindutva" पुस्तक में वे लिखते हैं,

"The vedic name of our nation 'सप्तसिंधु' has been mentioned as 'हप्तहिंदु' in the Avesta by the ancient Persian people. Thus in the very dawn of history we find ourselves belonging to the nation of the सिंधु s or Hindus" (pp.4-5). "The Avesta Persians know us as Hindus, the Greeks dropping the harse accent as Indos and through the Greeks almost all Europe and later on America as हिन्दु or Indians". (P. 10). ["हमारे राष्ट्र के वैदिक नाम 'सप्तसिंधु' का प्राचीन ईरानी लोगों ने अवेस्ता में 'हप्तहिन्दू' उल्लेख किया है। इस प्रकार ऐतिहासिक युग के उदयकाल में ही हम अपने को 'सिंधु' या 'हिन्दू' लोगों के राष्ट्र के होना पाते हैं।... अवेस्ता भाषी ईरानी हमें 'हिन्दु' नाम से जानते हैं, ग्रीक इसमें का कठोर उच्चार त्यागकर 'इण्डोस' कहते हैं, तथा ग्रीकों के द्वारा करीब-करीब समग्र युरोप एवं बाद में अमेरिका हमें 'हिन्दू' या 'इंडियन' कहते हैं"]

सावरकर लिखते हैं कि, सिंधू का 'हिन्दू' रूपान्तर स्वयं भारत की कुछ स्थानिक बोलियों में भी हुआ होगा। किन्तु कुलमिलाकर सावरकर का आग्रह इस धारणा पर है कि, आम भारतीयों को 'हिन्दू' नाम विदेशी इस्लामपूर्व ईरानियों ने दिया। बल्कि वे उस पर प्रसन्नता भी व्यक्त करते हैं।

"But if the world hits upon the word by which they would know us as one redolent of our glory or our early love then that word is certain not only to shadow but to survive every other name we have. This fact... soon enabled the epithet Hindu to assert itself once more and so vigorously as to push into the background even the well-beloved name of भरत खंड itself". (P. 10). ["किन्तु यदि दुनिया हमें संबोधित करने हमारी सुकीर्ती या हमारी पूर्व प्रिय भावना ध्वनित करनेवाला कोई विशेष शब्द प्रयुक्त करे, तो वह शब्द अवश्य ही हमारे अन्य सब नामों को पीछे धका देगा, इतना ही नहीं अपितु वे नाम विस्मृत हुए तो भी वह कायम रहेगा। इस तथ्य के परिणाम स्वरूप .... 'हिंदू' संबोधन



## क्या भारत विदेशी नाम स्वीकार करता?

प्राचीन ईरानियों ने 'सिंधू' नदी के आसपास रहने वाले भारतीयों के लिये 'हिन्दु' नाम तैयार किया भी होता, तो क्या भारत में वह व्यापक रूप में अपनाया जाता? जिस समय प्राचीन ईरानियों ने भारतीयों को 'हिन्दु' कहना बताया जाता है, भारत में वेदोपनिषदों के समान श्रेष्ठ साहित्य निर्माण हो गया था, स्वतंत्र राज्य स्थापित थे, देश को आर्यावर्त, भरतखंड, भारतवर्ष ऐसे स्वयं के नाम थे, संस्कृत भाषा सुव्यवस्थित रूप से प्रचार में थी, अनेक ज्ञानार्जन केन्द्र थे, तथा दूर-दूर के विदेशों से परस्पर संबंध चालू थे। ऐसे राष्ट्र को विदेशियों से एक अतिरिक्त नाम स्वीकारने की क्या आवश्यकता थी?

विदेशियों ने दिया नाम भारतीय अपने लिये स्वीकार न करते, ऐसा सावरकर भी कहते हैं (उक्त P. 46)। किन्तु उनकी आपत्ति मुख्यतः मुसलमान आक्रमकों पर है; तथा इस्लामपूर्व ईरानियों ने इस देश के निवासियों को 'हिन्दू' नाम दिया होगा इस धारणा पर वे (ऊपर उद्धृत किये अनुसार) कुछ प्रसन्नता ही व्यक्त करते हैं।

उस प्राचीन समय में स्वयं भारतीय ब्रह्मदेश (बर्मा, अब 'मायमार'), स्याम (अब थाईलैंड), यवद्वीप (जावा), सुमात्रा, सिंहपुर, कांबोज (कंबोडिया) आदि पड़ोस के देशों को सांस्कृतिक दृष्टि से प्रभावित कर रहे थे; तब वे स्वयं के लिए विदेशियों से कोई अतिरिक्त नाम क्यों अपनाते? फ्रेंच विद्वान G. Coedes ("The Indianized States of Southern Asia", English translation by Susan Brown Cowling, Introduction pp. xx, xvi) दक्षिण पूर्व एशिया के उन देशों को Farther India (बृहत्तर भारत) संबोधित कर स्पष्ट करते हैं कि,

"Culturally speaking, Farther India today is characterised by more of less traces of the Indianization that occurred long ago : the importance of the Sanskrit element in the vocabulary of the languages spoken there; the Indian origin of the alphabets with which those languages have been or still are written; the influence of Indian law and administrative organization;... and the presence of ancient monuments which, in architecture and sculpture, are associated with the arts of India and bear inscriptions in Sanskrit". [सांस्कृतिक दृष्टि से 'बृहत्तर भारत' प्राचीन काल में हुए भारतीयकरण के क्रमोद्देश चिन्हों से आज अंकित हैं: वहाँ बोली जाने वाली भाषाओं की शब्दावली में संस्कृत का प्रभाव; वे भाषाएँ जिन अक्षरों में लिखी जाती थी या अभी लिखी जाती हैं उनका भारतीय उद्गम; भारतीय विधि एवं शासकीय संरचना का प्रभाव,... तथा प्राचीन स्मारक जो स्थापत्य एवं

जवाहरलाल नेहरू भी 'हिन्दू' शब्द के विषय में लिखते हैं

".... But is clear that the word is a very old one, as it occurs in the Avesta and in old Persian. It was used then and for a thousand years or more later by peoples of western and central Asia for India, or rather for people living on the other side of the Indus river. The word is clearly derived from Sindhu, the old, as well as the present Indian name for the Indus. Form the Sindhu came the words Hindu and Hindustan, as well as Indus and India". (Discovery of India, P. 76). [“परन्तु यह स्पष्ट है कि, यह शब्द बहुत पुराना है, क्योंकि वह अवेस्ता में तथा प्राचीन ईरानी भाषा में प्रयुक्त है। यह शब्द उस समय, तथा बाद में एक हजार साल या उससे भी अधिक समय तक पश्चिम एवं मध्य आशिया के लोगों ने भारत के लिये, बल्कि इंडस नदी के उस पार रहने वाले लोगों के लिये प्रयुक्त किया था। स्पष्ट ही सिंधु, जो इण्डस का पुरातन एवं वर्तमान नाम है, से वह शब्द तैयार हुआ है। सिंधु शब्द से हिन्दू एवं हिन्दुस्थान, और उसी प्रकार इण्डस एवं इंडिया शब्द हुए”]।

जहाँ भारतीय लेखक इस प्रकार कहते हैं, वहाँ अन्य यही धारणा दोहराते रहेंगे, इसमें क्या आश्चर्य? अमेरिका में प्रकाशित World University Encyclopedia में Hindustan को "Original Persian name for India" (इंडिया के लिये मूल ईरानी नाम) कहाँ है। तथा H. G. Rawlinson लिखते हैं, "India is Greek, 'Hindu' is Persian". [‘इंडिया’ ग्रीक शब्द है, ‘हिन्दू’ ईरानी शब्द है]। ("Intercourse between India and the Western World-from the earliest times to the fall of Rome", P. 20).

Oxford English Dictionary (Vol. VII, P. 244) में यह जानकारी

दी है,

"Hindu, Hindoo : Pers. hindu, Urdu hindu, Indian, Zend hindu = Skr sindhu river, spe. the Indus, hence the region of the Indus, Sindh, gradually extended by Persians, Greeks and Arabs, to northern India as a whole". [हिन्दु, हिन्दू: ईरानी 'हिंदु', उर्दु 'हिन्दु', इंडियन, झेंद हेन्दु = सं. सिन्धु नदी, विशेषतः 'इंडस' नदी, अतः 'इंडस', सिंध नदी का प्रदेश, जिसका धीरे-धीरे ईरानीयों ने एवं अरबों ने संपूर्ण उत्तर इंडिया तक विस्तार किया]।



"Ptolemy's map of the Indo - Chinese coast contains Skr. names, indicating the existence of Hindu settlements as early as the 1st cent. A.D. In Cambodia, the remains at Angkor, Nakhom Wat, Borobudur, and other places are of Indian origin in their details". ('Encyclopaedia of Religion and Ethics', edited by James Hastings, Vol. 6). ['टॉलेमी कृत इंडो-चीन समुद्रतट के नक्शे में संस्कृत नाम होकर, वे कंबोडिया देश में ईसा की प्रथम सदी इतने प्राचीन काल में हिन्दू वसाहतीओं का अस्तित्व दर्शाते हैं। कंबोडिया में अंगकोर, नाखोमवट, बोरोबुदुर एवं अन्य स्थानों में स्थित स्मारक रचना उनके ब्योरे में भारतीय मूल की हैं।]

किन्तु फिर भी Coedes लिखते हैं,

"Curiously, India quickly forgot that her culture had spread over such vast domains to the east and southeast. Indian scholars have not been aware of this fact until very recently; it was not until a small group of them, having learnt French and Dutch, studied with the professors of the universities of Paris and Leyden that they discovered, in our works and those of our colleagues in Holland and Java, the history of what they now call, with justifiable pride, Greater India". [विचित्र बात है कि, भारत शीघ्र ही भूल गया कि उसकी संस्कृति पूर्व एवं दक्षिण-पूर्व में ऐसे विशाल प्रदेशों में प्रसारित हो गई थी। भारतीय विद्वानों को अभी कुछ थोड़े ही समय पूर्व तक इस तथ्य का ख्याल नहीं था; उनमें से कुछ थोड़े से व्यक्तियों ने फ्रेंच एवं उच्च भाषा सीखकर, पेरिस एवं लेडन के विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों के पास अध्ययन करने के बाद ही उन्होंने, हमारी एवं हॉलैण्ड और जावा के हमारे सहयोगियों की रचनाओं द्वारा इस क्षेत्र का जिसे अब वे उचित अभिमान से 'बृहत्तर भारत' कहते हैं इतिहास जाना।]

यह देखते कोई आश्चर्य नहीं कि स्वयं भारत के विद्वान भी यही अपमानास्पद कल्पना दोहराते रहे कि, उनके प्राचीन पूर्वजों का संबोधन 'हिन्दू' विदेशी ईरानियों ने दिया था।

हे!] Coedes Sylvain Levi का यह वचन भी उद्धृत करते हैं। "Mother of wisdom, India gave her mythology to her neighbours who went to teach it to the whole world. Mother of law and philosophy, she gave to three-quarters of Asia a god, a religion, a doctrine, an art. She carried her sacred language, her literature, her institutions into Indonesia, to the limits of the known world". ['ज्ञान की जननी होकर, भारत ने अपने पड़ोसियों को अपनी पौराणिक विद्या दी, जिसका उन्होंने समग्र संसार में प्रचार किया। विधि एवं दर्शन शास्त्र की जननी होकर, भारत ने एशिया के तीन चौथाई क्षेत्र को ईश्वर विषयक चिंतन, धर्म, सिद्धान्त एवं कला प्रदान की। भारत अपनी पावन भाषा, अपना साहित्य, अपनी संस्थाएं इंडोनेशिया में, उस समय की ज्ञात दुनिया की सीमा तक, ले गया।']

इसके अलावा Coedes "The great importance of the civilizing activity of India on those countries" [उन देशों पर भारत के सभ्यता प्रसारण कार्य का भारी महत्व] दर्शाते हुए लिखते हैं कि, कंबोडिया का नागरिक - "is subject to courts that judge according to a written code; he fervently practises a religion that possesses dogma, sacred writing, and a clergy and at the same time, gives him coherent views of the world and hereafter... he uses a system of writing that gives him access to a vast literature.... All this he owes to India" (उक्त pp.xvi,xvii.) ['ऐसे न्यायालयों के अधीन है जो लिखित कानून के अनुसार न्याय देते हैं, वह आस्था से ऐसे धर्म का पालन करता है जिसमें एक विशिष्ट सिद्धांत, पवित्र लेख एवं उपाध्याय होकर, इसी के साथ जो उसे इहलोक तथा परलोक के विषय में सुसंगत विचार देता है..... वह ऐसी लेखन पद्धती का प्रयोग करता है जो उसे विशाल साहित्य में प्रवेश देती है..... यह सब उसे भारत से प्राप्त हुआ है']।

इसी संदर्भ में विएट नाम पर एक लेख से यह उद्धरण प्रस्तुत है

"Danang, in Central Vietnam, a busy port city.... houses the Cham Museum, which displays the Hindu inspired art work of the ancient people who ruled southern Vietnam" ("The Vietnam Experience" by Veronica Garbutt, 'Asia Magazine' Hong Kong, May 15, 1988) ['मध्य विएट नाम में समुद्र-तट पर स्थित औद्योगिक शहर दानांग... वहाँ चैम वस्तुसंग्रहालय

1. L'Inde Civilisatrice : Aperçu historique, Paris 1938, p. 136.



ईरान में न सही, क्या भारतीयों का एक अतिरिक्त संबोधन इस आशय में 'सिंधु' शब्द का 'हिन्दू' रूपांतर स्वयं भारत में हुआ? भारत की लोक भाषाओं में भी 'स' का उच्चार कभी-कभी 'ह' होता है। अथर्व वेद के 'हरितो न रंजाः' (20-30-4) वचन पर 'निघंटु कोश' में कहा है, "सरितो हरितो भवन्ति सरस्वत्यो हरस्वत्यः"। किन्तु यह मानते हुए भी, सिंधु नदी या सिंधू (सिंध) प्रदेश के नाम का ऐसा रूपान्तर हम कहाँ पाते हैं? यह नाम उसी प्रकार चालू है, तथा इसी के साथ सदियों से 'हिन्दू' नाम समग्र भारत के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। स्पष्ट है कि ये दो नाम परस्पर भिन्न हैं।

यह सब ध्यान में लेते हुए हमें 'हिन्दू' नाम, जो भारतीयों की वाणी में, हृदय में, प्रदीर्घ काल से सश्रद्ध दृढ़मूल हो गया है, की अन्य साधार युक्तिसंगत व्युत्पत्ति खोजना आवश्यक है।



## प्राचीन चीनी उल्लेख

### यूएन च्वांग का यात्रा वृत्तांत

भारत के लिये प्रयुक्त नाम 'हिन्दू' की व्युत्पत्ति पर कुछ विश्वसनीय प्रमाण प्राचीन चीन देशीय साहित्य में प्राप्त होता है। भारत में बुद्ध धर्म के उदय बाद कई अन्य देशों में भी उसका प्रसार हुआ, जिससे उसके कुछ विदेशी अनुयायी उस धर्म के पावन उद्गम स्थान की यात्रा करने प्रेरित हुए। ऐसे ही एक यात्री चीनी विद्वान यूएन च्वांग (Yuan Chwang/Hsuan-tsang) ईसा की सातवीं सदी में भारत आये थे।

च्वांग ने भारत में काफी भ्रमण कर कई ग्रन्थों का अध्ययन किया। उनकी यात्रा का वर्णन चीनी भाषा में उपलब्ध है, जिसका ज्यूलियन<sup>1</sup> द्वारा फ्रेंच भाषा में, तथा बील<sup>2</sup> द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है। इसके अलावा वॉट्स<sup>3</sup> ने उस चीनी रचना के कुछ अंशों का अंग्रेजी अनुवाद देकर साथ में अपनी टिप्पणियाँ दी हैं।

प्राचीन काल में भारत को चीनी भाषा में प्रायः T'ien-chu कहते थे। च्वांग की रचना में एक स्थान पर भारत के नाम की चर्चा आयी है; उसके वॉट्स ने किये अनुवाद से यह उद्घरण प्रस्तुत है—

"We find that different counsels have confused the designations of T'ien-chu (India); the old names were Shen-tu and Sien (or Hien)-tou; now we must conform to the correct pronunciation and call it Yin-tu. The people of Yintu use local appellations for their respective countries; the various districts having different customs; adopting a general designation, and one which the people like, we call the country Yin-tu which means the 'Moon'". (Vol. I.p. 131) [ 'ऐसा दीखता है कि, T'ien-chu (India) के नामों के बारे में विभिन्न वचनों के कारण घोटाला उत्पन्न हुआ है; पुराने नाम Shen-tu तथा Sien (or Hien)-tou थे, अब हमने सही उच्चारण कर उसे Yin-tu कहना चाहिए। Yin-tu के लोग अपने विशिष्ट प्रदेशों के लिये स्थानीय नाम प्रयुक्त करते हैं; विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग प्रथाएँ हैं; हम एक व्यापक नाम, जो जनता को प्रिय है, प्रयुक्त कर इस देश को Yin-tu कहेंगे, जिसका अर्थ 'चन्द्र' है ]।

1. Stanislas Julien, "Memoires sur Les Contrees Occidentales, Traduits Du Sanscriten Chinois, en L'an 648, Par Hiouen-Tsang".
2. S. Beal, "Buddhist Records of the Western World-Chinese Accounts of India".
3. Thomas Watters, "On Yuan Chwang's Travels in India."



Jonathan Chaves द्वारा मुझे कृपया दिया निम्न स्पष्टीकरण प्रस्तुत है, जिसमें उन्होंने मूल चीनी वचन का अपना अनुवाद भी दिया है।

"After talking with you, I looked up the original Chinese text of 'Yuan Chwang'. Here is my own fresh translation directly from the original :

'As for the name of T'ien-chu, there are various confused designations. In ancient times it was called Shen-tu, while others called it Hsien-tou. At present, we will follow the correct pronunciation, according to which it should be called, Yin-tu. This word, Yin-tu, is what in Chinese we call 'Yueh' ('moon'). Moon has many names, of which this (Yin-tu) is one..... For in this land, sages and wise men have appeared in succession, guiding ordinary men and regulating things, just like the moon shining down, hence the name, Yin-tu.'

Beal is correct in referring to 'Chinese', but his wording seems to suggest that the meaning is that 'Yin-tu' is the Chinese word for moon; of course, it means nothing of the kind. The original text clearly instructs the reader that Yin-tu is the sanskrit equivalent of the Chinese word for moon 'yueh'..... 'Yin-tu' and 'In-tu' are simply two different ways of romanizing the exact same characters. Sien-tou and Hien-tou are also two different, non-standard ways of romanizing the same name Hsien-tou....."

['आपसे बात करने बाद मैंने यूअन च्वांग का मूल चीनी लेख देखा। उस मूल लेख से स्वयं मैंने किया यह अनुवाद दे रहा हूँ।

'टिएन-चू' के नाम के लिये विविध घोटाले के संबोधन है। प्राचीन काल में उसे Shen-tu कहते थे, जबकि अन्य उसे Hsien-tou कहते थे। सांप्रत में हम उसका असल उच्चारण करें, जिसके अनुसार उसे Yintu कहना चाहिए। यह Yintu शब्द, जिसे चीनी भाषा में हम Yueh (चन्द्र) कहते हैं वह है। 'चन्द्र' के लिये कई नाम हैं, उनमें से यह (Yintu) एक है..... क्योंकि, नीचे (पृथ्वी पर) प्रकाश डालने वाले चन्द्र के समान इस देश में सामान्य जनों को मार्गदर्शन करने वाले एवं घटनाओं का नियमन करने वाले संत एवं विद्वान लगातार होते आ रहे हैं, अतः यह Yintu नाम'।

से संबोधित करते थे। यह स्वाभाविक ही था; क्योंकि उस समय यहाँ मगध, अंग, वंग, कलिंग आदि अनेक स्वतंत्र राज्य स्थापित थे। किन्तु फिर भी समान परंपरा, संस्कृति, संस्कृत भाषा, कुल जीवन पद्धति, इत्यादि दृष्टियों से समग्र भारत एक राष्ट्र है, इसका जनता में ख्याल भी था।

## भारत का एक अन्य नाम 'इंदु'

च्वांग प्रथम इस देश के लिए उन्होंने साधारणतया सुने नाम बताते हैं, Shen-tu एवं Hien-tou। इनमें द्वितीय नाम भारतीय उच्चार का 'हिन्दू' दीखता है। पहिला नाम 'सिंधु' माना जा सकता है; जिसका एक विशेष स्पष्टीकरण आगे प्रकरण 5 में दिया है। किन्तु उसके अलावा वह नाम, जो पश्चिम भारत का सिंधु प्रदेश दर्शा सकता है, इस कारण प्रयुक्त किया जाता होगा कि, प्राचीन समय में भारत का चीन, मध्य एशिया एवं यूरोप से आवागमन का एक मुख्य मार्ग सिंध प्रदेश से था, तथा भारतीय व्यापारी विदेशों में स्वयं को 'सिंधु' से आये बताते होंगे। इसी प्रकार विदेशी व्यापारी भी माल की अदला-बदली करने भारत के उस सीमा प्रदेश तक पहुंचते होंगे, और इसलिये भारत को आने-जाने का अपना प्रवास बताने में साधारणतया 'सिंधु' का उल्लेख सहज ही करते होंगे।

किन्तु वह कुछ भी हो, च्वांग स्पष्ट करते हैं कि, उन्हें जो जानकारी मिली उसके अनुसार उन भिन्न उच्चारणों के मूल में वास्तविक नाम Yin-tu (Indu इन्दु) है; तथा वे उसका 'चन्द्र' यह खास अर्थ भी देते हैं। च्वांग के कथन का ऊपर उद्धृत अनुवाद देकर वेंटर्स लिखते हैं".....his words would seem to indicate that he regarded T'ien-chu, Shen-tu, and Sien-tou as only dialectical varieties or mistaken translations of Yin-tu, which was the standard pronunciation" [उनका-च्वांग का - आशय यह दीखता है कि, Yintu यह सर्वमान्य प्रचलित उच्चारण होकर, Tien-chu, Shen-tu और Sien-tou ये उसके स्थानिक बोली में उच्चारभेद या गलत रूपांतर थे]।

जहाँ वेंटर्स च्वांग के भारत के नाम के विषय में शब्दों का अनुवाद"..... Yin-tu which means the Moon" करते हैं, वहाँ बील (Vol. II. p.129) Yintu के स्थान पर In-tu शब्द रखते हैं, जो और भी अधिक स्पष्ट तथा चन्द्र सूचक संस्कृत 'इंदु' शब्द है। ज्यूलियन भी फ्रेंच अनुवाद में (p.57) In-tou कहकर साथ में "(Indou)" जोड़ते हैं।

किन्तु बील अपने अनुवाद में In-tu शब्द के साथ यह लिख देते हैं "in Chinese this name signifies the Moon" ['चीनी भाषा में इस नाम का अर्थ चन्द्र है']। यह कुछ भ्रमोत्पादक है। In-tu (Indu) यह चन्द्र के अर्थ में शुद्ध संस्कृत शब्द है। तथा च्वांग का भी यह संकेत नहीं है कि वह एक चीनी शब्द है। इस संबंध में



करने का आभास देती है कि, Yintu यह चन्द्र के लिये चीनी शब्द है ऐसा (च्वांग के लेख का) अर्थ है; किन्तु उसका वैसा कुछ भी अर्थ नहीं। च्वांग का मूल लेख वाचक को स्पष्ट बताता है कि Yintu यह चन्द्र के लिए चीनी शब्द Yueh का समानार्थी संस्कृत शब्द है। Yintu एवं Indu ये केवल एक ही अक्षरों को रोमन लिपी में लिखने के दो भिन्न प्रकार हैं। Sientu एवं Hien-tou ये भी Hsien-tou इस एक नाम को रोमन लिपी में लिखने के दो भिन्न अप्रचलित प्रकार हैं.....]

इसमें कहे अनुसार च्वांग का कथन यह है कि भारत के नाम के लिये प्रयुक्त Yin-tu (यिंटु) शब्द का अर्थ चन्द्र है, जिसके लिये चीनी भाषा में Yueh शब्द है; च्वांग का आशय यह नहीं कि 'यिंटु' स्वयं चन्द्र सूचक चीनी शब्द है।

### ‘इंदु देश’ का स्पष्ट उल्लेख -

च्वांग के कथन के सन्दर्भ में वेंटर्स और लिखते हैं,

"Further, his language does not seem to intimate, as Julien understands it to intimate, that Yin-tu was the name for all India used by the inhabitants of the country. In some other works we find it stated that Yin-tu was the native name for the whole country, AND INDU-DESA GIVEN AS THE ORIGINAL SANSKRIT TERM. Our author may have had the opinion but this does not seem to be the meaning of his statements here. On the contrary he apparently wishes us to understand that the natives of India had only designations of their own states, such as Magadha and Kausambhi, and that they were without a general name under which these could be included. It was the peoples beyond, as for example the Turks, who gave the name Yin-tu, and the Hu who gave Sin-tu to a great territory of uncertain limits. Then the Buddhist writers of Kashmir, Gandhara, and other countries beyond India proper, seem also to have sometimes used the name Yin-tu. But, as I-ching tells us, although this word may mean 'moon' yet it was not the current name for India. In Buddhist literature India is called Jambudvipa and portions of it Aryadesa and Madhyadesa. One of the other names for India to be found in Buddhist literature is Indravardhana". (Vo. I, pp. 131-32, capitals nine). [और यह कि, 'यिंटु' नाम इस देश के निवासी

प्रतीत नहीं होता है, यद्यपि ज्यूलियन वैसा आशय समझते हैं। कुछ अन्य रचनाओं में यिंटु समग्र देश के लिए स्वयं भारतीयों ने दिया नाम था ऐसा कहा होकर, इंदु देश यह मूल संस्कृत शब्द दिया है, ऐसा हम पाते हैं। च्वांग की यह धारणा होगी, किन्तु उन्होंने यहाँ लिखे शब्दों का वैसा अर्थ नहीं दीखता। इसके विपरीत ऐसा प्रतीत होता है कि, वे (च्वांग) हमें यह दर्शाना चाहते हैं कि, भारत के लोग मात्र अपने-अपने राज्यों के नाम, जैसे मगध एवं कौसंबी, लेते थे, और इनका जिसमें समावेश हो सके ऐसा एक व्यापक नाम उनके पास नहीं था। वे तो बाहरी लोग थे, जैसे तुर्क जिन्होंने अनिश्चित सीमाओं के एक विशाल क्षेत्र को Yin-tu नाम दिया, तथा हू जिन्होंने Sin-tu नाम दिया। फिर काश्मीर, गंधार तथा खास भारत के बाहर के अन्य देशों के बौद्ध लेखकों ने भी कभी-कभी Yin-tu नाम का प्रयोग किया दीखता है। किन्तु जैसा कि इ-चिंग (I-ching) हमें बताते हैं, यद्यपि इस शब्द का अर्थ चन्द्र है, वह भारत के लिये प्रचलित नाम नहीं था। बौद्ध साहित्य में भारत को जंबुद्वीप एवं उसके विभागों को आर्य देश तथा मध्य देश कहा है। भारत के लिए बौद्ध साहित्य में प्राप्त एक अन्य नाम इन्द्रवर्धन है।]

सही है कि 'यिंटु' भारत के लिये प्रयुक्त अकेला एक नाम नहीं था; किन्तु जब कभी वह प्रयुक्त किया जाता तब समग्र भारत के लिए था, यह च्वांग का आशय है, ऐसा ज्यूलियन का कथन ठीक प्रतीत होता है। स्वयं वेंटर्स कहते हैं कि कुछ अन्य (चीनी) लेखक 'यिंटु' समग्र भारत को भारतीयों ने दिया नाम बताते हैं, तथा मूल संस्कृत शब्द 'इंदु देश' भी देते हैं; और वेंटर्स यह भी कहते हैं कि च्वांग की भी वैसी धारणा होगी। फिर भी वेंटर्स लिखते हैं कि तुर्कों ने इस विशाल देश को Yin-tu नाम दिया। उनके इस कथन का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है।<sup>9</sup>

इस देश के निवासियों के पास समग्र भारत के लिये स्वयं का कोई नाम न होकर विदेशियों ने उसे एक सर्वसमावेशक व्यापक नाम रखा, यह वेंटर्स की टिप्पणी निराधार है। इस आक्षेप का एक अन्य उदाहरण देखिये। 'अरब और भारत के संबंध' के लेखक सैयद सुलेमान नदवी लिखते हैं (रामचन्द्र वर्मा द्वारा हिन्दी अनुवाद, प्रकाशन हिन्दुस्तान अकादमी), "मुसलमानों के आने से पहले इस पूरे देश का कोई एक नाम नहीं था। हर प्रांत का अलग-अलग नाम या हर राज्य का नाम उसकी राजधानी के नाम से प्रसिद्ध था। जब फारस वालों ने इस देश के एक प्रांत पर अधिकार किया, तब उन्होंने उस नदी का नाम 'हिन्द' हो' रखा जिसको सिन्ध नदी कहते हैं और अरबों की भाषा में जिसका नाम महरान है... फारस वालों ने इसको 'हिन्द' हो' कहकर पुकारा और इससे इस देश का नाम 'हिन्द' पड़ गया।"

9. वेंटर्स ने इ-चिंग के किये उल्लेख की चर्चा आगे अलग से की है।



जिनके अपने-अपने नाम थे, इसमें संदेह नहीं। किन्तु इसी के साथ समग्र राष्ट्र के लिये आर्यावर्त तथा भारतवर्ष (भरत खंड) ऐसे नाम भी प्रचलित थे। यह एकत्व सूचक भावना रामायण-महाभारतादि महाकाव्यों में, कालिदास आदि महाकवियों की रचनाओं में एवं शंकराचार्य के दार्शनिक लेखन में भी स्पष्ट देखी जा सकती है। बृहदारण्यक उपनिषद् में एक स्थान पर (4-1-1) ऋषि याज्ञवल्क्य राजा जनक को 'सम्राट्' सम्बोधित करते हैं। शंकराचार्य उस शब्द का 'राजसेय यज्ञ करने वाला स्वतंत्र राजा' यह अर्थ देकर लिखते हैं, "समस्तस्य वा भारतस्य राजा" ('या समस्त भारत का राजा')। यह विशाल भूमि मूलतः एक राष्ट्र है, इसका यहाँ के निवासियों को सदैव ख्याल था। तथा इसी के अनुसार, भारत के लिये पारंपरिक नामों के अलावा एक और समुचित नाम लोगों में प्रचलित एवं प्रिय था- 'इंदु देश'; जिसका उद्भव इसी देश में हुआ था; विदेशियों ने दिया नहीं। यह 'इंदु' शब्द भारत के 'हिन्दु' नाम के मूल में है।

### भारत के लिये चीनी नाम के मूल में संस्कृत 'इंदु' शब्द

च्वांग के प्रवास वर्णन का फ्रेंच अनुवाद करने के अलावा, ज्यूलियन एक लेख<sup>१</sup> में भारत का चीनी नाम किस प्रकार मूलतः चन्द्रवाचक शब्द 'इंदु' है यह सिद्ध करते हैं। ज्यूलियन का यह महत्वपूर्ण फ्रेंच लेख मैने (अमेरिका की University of Maryland के) फ्रेंच एवं चीनी साहित्य के प्राध्यापकों की सहायता से इस प्रकार समझने का प्रयास किया है।

ज्यूलियन शुरू में बौद्ध ग्रंथ Ling-yen-tsi-tchou के आधार पर कहते हैं, कि भारत के लिये चीनी नाम Thien-tchou का अर्थ lune (यानी चन्द्र) होकर, वह संस्कृत 'इंदु' का समानार्थी शब्द है। इसके बाद ज्यूलियन बताते हैं कि, Thien-tchou (जो उनके अनुसार Chin-tou शब्द ही है) के दोनों पदांश संस्कृत 'इन्दु' के ही भिन्न उच्चार हैं। द्वितीय पदांश tchou (जो Chin-tou में tou है) की चर्चा करते हुए ज्यूलियन कहते हैं कि, उसका उच्चारण tu या du करना चाहिए; इसके लिये वे (ईसा की सत्रहवीं शती में रचित) Tching-tsscu-thong/Cheng-tzu-t'ung शब्दकोश का आधार लेते हैं। फिर वे उक्त शब्दकोश में निर्दिष्ट इतिहासकार Ssc-ma-thsien/Ssu-mach'ien<sup>२</sup> के आधार पर कहते हैं कि, उक्त प्रथम पदांश Thien (Chin उच्चार Shen) का उच्चारण yuen/yuan करना चाहिए, जो Khang-hi-

१. लेख का शीर्षक "Then'tchou, L'Inde" (Journal Asiatique, Paris, Aout 1847, pp. 90-91).

२. (Sima quin/Suh-mah Shee-en); ईसा पूर्व करीब १४५ से ८७; चीन देश का 'महान इतिहासकार'; Han वंशी सम्राट् wuti का अधिकृत दरबारी इतिहास लेखक, जिसने चीन का अतिप्राचीन काल से सर्वप्रथम इतिहास लिखा।

करीब समान हैं। अंत में ज्यूलियन निष्कर्ष निकालते हैं कि, इस तरह जहाँ Inde/India (भारत) का चीनी नाम, जो च्वांग के अनुसार चन्द्रवाचक संस्कृत शब्द 'इंदु' indou के ही कुछ भिन्न लेखन द्वारा In-tou/Yintu (Indou) ऐसा लिखना चाहिए, अन्य चीनी प्रवासियों द्वारा, जो उसकी भाषिक व्युत्पत्ति नहीं जानते थे, संस्कृत Indou (इंदु) के दो पदांशों के कुछ रूपांतर के परिणामस्वरूप Thien-tou, Chin-tou, Yun-tou, Hien-tou, Thien-tchou लिखा गया होगा।

ज्यूलियन की इस महत्वपूर्ण टिप्पणी का मैं यहाँ मूल फ्रेंच उद्धरण भी देता हूँ। उसमें प्रमुख शब्द चीनी लिपी में भी छपे होकर, समानार्थी संस्कृत शब्द 'इंदु' ज्यूलियन ने देवनागरी लिपि में भी दिया है।

'Suivant l'ouvrage bouddhique Ling-yen-tsi-tchou (liv. I, fol. 2) le mot Thien-tchou veut dire lune (en sanskrit indou È}É). On voit per cette 'etymologie, que less deux syllabes de ce mot sont alterees at on a liry de s'etonner que cette orthographe corrompue ait pu se conserver jusqu'a nos jours dans les ecrivains chinois. Tachons de remonter a l' origine de cette alteration.

On lit dans le dictionnaire Tching-tscu-thong, au mot (vulgo tchou) : dans cvulgo Chin-tou), meme mot que (vulgo thien-tchou), le mot doit se prononcer comme Tou (dou. Or, le son de (vulgo chin-tou) acte change en celui de (vulgo thien-tou), puis on a abrege'le mot tou (dou) en Khang-hi rapporte cette abreviation au mot tou); enlin l'abreviation tou (dou) a reen le son de tchou.

Quant an ceractere (vulgo chin), suivant l'historien Ssc-ma-thsien (cest toujours le Tching-tscu-thong que nous citons), il doit se prononcer ici comme yuen (mot qui, dans Khang-hi, se prononce aussi yun, son tres-voisin de yn on in).

D'apre's ce qui pre'cede, on s'explique bien comment le mot Inde, qui, d'apre's le voyageur Hiouen-thsang, doit s'ecrire en-tou (indou), transcription phonetique du mot sanskrit È}ÉN indou (lune), a pue'tre'e crit (Cf. Fan-i-tsi, liv. VII, fol. 8, et Khang-hi) per des voyageurs chinois, qui en ignoraient l'etymologie (thien-tou), (chin-tou) et (chin-tou) (yun-tou),

१. K'ang-hsi tzu-tien; इसकी रचना ch'ing वंशी सम्राट् K'ang-hsi, जिसने चीन पर ई.स. १६६१ से १७२२ तक शासन किया, द्वारा नियुक्त विद्वानों ने की थी।



et enfin thien-tchou, par suite de l'alteration des deux syllabes du mot sanskrit इन्दु Indou, lune.

जहाँ ज्यूलियन Thien-tchou एवं Chin-tou एक ही नाम मानते हैं, मुझे संभव लगता है कि पूर्ववर्ती नाम खास भारत के लिये होकर, chin-tou, यदि उसका उच्चार Shen-tu किया गया हो, सिंधु प्रदेश के लिये हो सकता था, या फिर Chin-tou एवं Shen-tu भिन्न नाम होंगे। इस दृष्टि से मैंने ऊपर Shen-tu की चर्चा की होकर, आगे प्रकरण 5 में भी की है।

कुछ भी हो, यहाँ इतना ध्यान देना आवश्यक एवं पर्याप्त होगा कि चीन देश में भारत के लिये प्रयुक्त Thien-tchou नाम मूलतः संस्कृत 'इन्दु' नाम था।

## भारत को 'इन्दु' क्यों कहते थे ?

चीनी लेखक भारत के लिये उनके नाम के मूल में 'इन्दु' शब्द बताते हैं इतना ही नहीं, वे उसका स्पष्टीकरण भी देते हैं। च्वांग (बील ने किये अनुवाद के अनुसार) लिखते हैं,

"The moon has many names, of which this is one. For as it is said that all living things ceaselessly resolve in the wheel (of transmigration) through the long night of ignorance, without a guiding star, their case is like (the world) the sun gone down; as then the torch affords its connecting light, though there be the shining of the stars, how different from the bright (cool) moon; just so the bright connected light of holy men and sages guiding the world as the shining of the moon, have made this country eminent, and so it is called In-tu". (Vol. II. p. 129).<sup>9</sup> [चन्द्र के लिये अनेक नाम हैं, जिनमें एक यह है. क्योंकि जैसा कहा जाता है कि सब प्राणी दीर्घ अज्ञान रात्रि में मार्गदर्शक तारों के अभाव में (पुनर्जन्म के) चक्र में सतत भ्रमण करते रहते हैं तब उनकी अवस्था सूर्यास्त के बाद होने वाली (पृथ्वी की) अवस्था के समान होती है, तथा उस समय स्वच्छ (शीतल) चन्द्र से पूर्ण तथा भिन्न तारों का प्रकाश होने पर भी, (चन्द्र का) प्रकाश स्रोत सब पदार्थों को परस्पर संबद्ध करने वाला प्रकाश देता है, उसी के अनुसार दुनिया को चन्द्र प्रकाश के समान मार्गदर्शन करने वाले एक के बाद एक आने वाले साधु संतों के निर्मल प्रकाश ने इस देश को महान बनाया है, और इसलिये इसे 'इन्दु' कहते हैं']।

9. च्वांग के इस उद्धरण का एक अन्य अंग्रेजी अनुवाद ऊपर दिया है।

से धन्य रही है। इस महान परंपरा में महात्मा गौतम बुद्ध का भी समावेश है, किन्तु वह परंपरा न उनसे आरंभ हुई न ही उनसे समाप्त हुई। फिर भी वेंटर्स (पूर्व उल्लेखित Vol. I, pp-178-79) बुद्ध तक ही सीमित संकुचित दृष्टि कोण अपनाकर, च्वांग के कथन में यह आशय देखते हैं कि गौतम बुद्ध के महानिर्वाण पश्चात् सर्वत्र अंधकार छा गया। वस्तुतः च्वांग के वचन में स्वयं बुद्ध तथा बुद्धपूर्व एवं बुद्धोत्तर भारतीय महान व्यक्तियों का समावेश है।

च्वांग के अनुसार भारत में बुद्धधर्मी लोग ही इस देश को 'इन्दु देश' कहते थे ऐसा नहीं। उन्होंने पाया कि भारत की आम जनता में यह नाम लोकप्रिय था। 'इन्दु देश' नाम का खास बुद्ध धर्म से संबंध नहीं। बिहार स्थित नलंदा विश्वविद्यालय, जहाँ च्वांग काफी समय रहे, की भूमिका मात्र बौद्धधर्मी न होकर व्यापक भारतीय थी। वहाँ बुद्ध धर्म के अलावा वेद, वेदान्त, न्याय, व्याकरण, आयुर्वेद आदि भारतीय विद्याओं का भी अध्ययन-अध्यापन होता था।<sup>9</sup>

वेंटर्स की टिप्पणियों से ज्ञात होता है कि, च्वांग के अलावा कुछ अन्य चीनी लेखकों ने भी प्रतिपादित किया है कि, जिस प्रकार रात्रिकालीन तारिकाओं में चन्द्र श्रेष्ठ होता है, वैसा भारत सब देशों में श्रेष्ठ माना जाता है और इसीलिए इसे 'इन्दु' नाम दिया है।<sup>12</sup> वेंटर्स यह भी लिखते हैं कि कुछ चीनी लेखक, यद्यपि 'इन्दु' के विषय में स्पष्टीकरण नहीं देते, यह उल्लेख करते हैं कि भारत को चन्द्रवाचक 'इन्दु' नाम से संबोधित किया जाता था।

वस्तुतः भारत के लोग अति प्राचीन काल से अपने देश को सर्वश्रेष्ठ देखते थे। महाभारत के भीष्म पर्व में (गीता प्रेस संस्करण) भारत का वर्णन प्रारंभ करते हुए संजय कहते हैं -

अत्र ते कीर्तयिष्यामि वर्षं भारत भारतम्।

प्रियमिन्द्रस्य देवस्य.....॥१-५

"राजा धृतराष्ट्र, अब मैं आपको भारतवर्ष, जो देवेन्द्र को प्रिय है, का वर्णन करता हूँ।" विष्णुपुराण में भारत की प्रशंसा में कहा है -

9. देखिये A.I. Basham, "The Wonder that was India," p. 166.

2. 'इन्दु' शब्द का 'सर्वश्रेष्ठ' इस अर्थ में कालिदास ने 'रघुवंश' काव्य में 'दिलीप इति राजेन्दुः इन्दुः क्षीरनिधाविव' (१-१२) प्रयोग किया है; भाष्यकार मल्लीनाथ 'राजेन्दुः' का अर्थ 'राजश्रेष्ठः' देते हैं।



“महामुने (मैत्रेय), जंबुद्वीप में भारत सर्वश्रेष्ठ है... हजारों जन्मों के बाद, पर्याप्त पुण्यसंचय होने पर, प्राणी को यहाँ मानव जन्म प्राप्त होता है”। यह स्वाभाविक ही था कि, भारतीयों ने अपने देश को, जिस पर उन्हें इतना गर्व था,<sup>१</sup> ‘इंदु’ यह समुचित अतिरिक्त नाम दिया। इसी ‘इंदु’ का प्राकृत लोकभाषा में ‘हिन्दू’ रूपान्तर हुआ।



## ईरानी अवेस्ता का ‘हिन्दु’ शब्द भारत के लिये नहीं था

### ऋग्वेद का ‘सप्तसिंधु’

पूर्व प्रकरण में हमने देखा कि चीनी लेखकों के अनुसार भारत का एक नाम संस्कृत शब्द ‘इंदु’ था; जिससे ‘हिन्दु’ शब्द बना है। फिर भी भारत के लिये ‘हिन्दु’ नाम प्राचीन ईरानियों ने ‘सिंधु’ का वैसा उच्चारण करके दिया यह भ्रामक धारणा इतनी दृढ़ हो गई है कि उसका विस्तार से खंडन आवश्यक है। उस धारणा का प्रायः देखा जाने वाला एक रूप इस प्रकार है।

ऋग्वेद में कुछ स्थानों पर ‘सप्तसिंधु’ शब्द आया है; एक संदर्भ में इसका अर्थ मात्र सात नदियों न होकर, ‘सात नदियों का प्रदेश’ यह है, जिसका आशय तत्कालीन भारत लिया जाता है। ऋग्वेद की वह ऋचा इस प्रकार है, “य ऋक्षात् अंहसो मुंचत यो वाड्यार्त् सप्तसिंधुषु। वधो दासस्य तुविनृम्ण नीनमः” ८-२४-२७।<sup>१</sup> यह ‘सप्तसिंधु’ शब्द ईरानी प्राचीन धर्मग्रंथ झेंद अवेस्ता में ‘हप्तहिन्दु’ रूपांतर में पाया जाता है, तथा उक्त धारणा के अनुसार वह भी भारत के लिये होकर बाद में उसका संक्षेप ‘हिन्दू’ हुआ।

सही है कि संस्कृत और अवेस्ता भाषाओं में कुछ उच्चारणसाम्य होकर ‘स’ का उच्चार ‘ह’ होता है; जैसे संस्कृत ‘सखा’ (मित्र) = अवेस्ता ‘हखा’; ‘सप्त’ = ‘हप्त’; ‘सेतु’ = ‘हेतु’। यद्यपि अवेस्ता में ‘स’ है ही नहीं ऐसा नहीं; देखिये ‘सतम्’ (संस्कृत ‘शतम्’), ‘सरअद’ (संस्कृत ‘शरद’)।

परन्तु ऋग्वेद का वह ‘सप्तसिंधु’ कौनसा प्रदेश था? सायन भाष्य में (ऋग्वेद १०-७५-५ के आधार पर) वे सात नदियाँ गंगा, यमुना, सरस्वती, शतुद्री (सतलज), परुष्णी (रावी), असिक्नी (चेनाब) एवं वितस्ता (झेलम) बताई हैं। इसमें स्वयं सिंधु का उल्लेख नहीं, यद्यपि उसकी शाखाओं का समावेश है। डॉ. संपूर्णानंद (‘आर्यों का आदि देश’, पृ. ४९, ५१) उस ‘सप्तसिंधु’ प्रदेश को मात्र पंजाब एवं काश्मीर बताकर, उन सात नदियों के नाम वितस्ता, असिक्नी, परुष्णी, विपाशा (बियास), शतुद्री, सिंधु एवं सरस्वती देते हैं; इनमें गंगा एवं यमुना नहीं है।

१. ग्यारहवीं शताब्दि में भी अल-बेरुनी (आगे प्रकरण ६ में उद्धृत) ने भारतीयों में यही धारणा देखी।

१. आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा हिन्दी अनुवाद, “जो इन्द्र सात नदियों के किनारे निवास करनेवाले यजमानों के पास धन प्रेरण करते हैं और जो निर्रक्ति के बंधन से छुड़ते हैं, ऐसे हे इन्द्र! तुम राक्षसों का संहार करने के लिए शस्त्र को झुकाओ।”



किन्तु यह बात अलग रखकर हम अवेस्ता के उस 'हप्तहिंदु' शब्द पर ही अधिक विचार करें। वह शब्द इस्लाम-पूर्व झोरास्ट्रियन धर्मग्रंथ झेंद अवेस्ता के 'वेदिदाद' विभाग के प्रथम अध्याय में आता है, जहाँ उसका अर्थ ('सप्तसिंधु' के समान) 'सात नदियों का प्रदेश' ऐसा हो सकता है। किन्तु क्या वह भारत का कोई प्रदेश था? उस प्रथम अध्याय में परम देवता आहुर मज़द उन्होंने निर्माण किये सोलह प्रदेश बता रहे हैं, जिनमें पन्द्रहवाँ प्रदेश 'हप्तहिंदु' (हप्तहेंडू) है (श्लोक १९, कुछ संस्करणों में १८)।

ईसा की ग्यारहवीं सदी के इस्लामी विद्वान अल-बेरूनी ने इस 'हप्तहिंदू' पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है। वे प्रथम यह जानकारी देते हैं<sup>१</sup>। भारत के उत्तर में विशाल हिमालय आदि पर्वतों के दोनों ओर, उत्तर तथा दक्षिण से, कई नदियाँ का उद्गम है। उनमें से दक्षिण तरफ की नदियाँ - गंगा, यमुना, सिंधु, सरस्वती तथा कुछ अन्य, भारत में बहती हुई समुद्र में जाकर मिलती है। इसी प्रकार उन पर्वतराशियों के उत्तरवर्ती उतारों पर उद्गम पाकर कुछ नदियाँ तुर्कस्तान आदि देशों में बहती हुई कार्स्पियन समुद्र, अरल समुद्र, काला सागर, बाल्टिक समुद्र आदि को मिलती हैं (उक्त पृ. २५८)। यह कहने बाद अल बेरूनी भारत के पंजाब में से बहने वाली पाँच नदियों का उल्लेख करते हुए लिखते हैं -

"After these five rivers have united below Multan at a place called Pancanada, i.e. the meeting place of the five rivers, they form an enormous water course..... The Muslims call the river after it has passed the Sindhi city Aror, as a united stream, the river of Milhran..... It reaches Almansura.... and flows into the ocean at two places near the city Loharani, and more eastward in the province of Kacch at a place called Sindhu-sagar i.e. the Sindhi sea." (उक्त, Vol. I, P.260) [ये पाँच नदियाँ मुलतान के नीचे पंचनद - यानी पाँच नदियों का संगम-इस नाम के स्थान पर एकत्र मिलने बाद उनका एक विशाल जल प्रवाह होता है.....सिंधी शहर 'अरोर' पार करने के बाद एक मिश्रित प्रवाह हुए उस नदी को मुसलमान 'मिहरान नदी' कहते हैं..... वह अलमन्सूर पहुँचती है..... और लोहरानी शहर के पास दो जगह, तथा और पूर्व तरफ कच्छ प्रदेश में 'सिन्धुसागर' नाम के स्थान पर, समुद्र से मिलती है']।

पंजाब की पाँच नदियों के संगम की यह जानकारी देने के बाद अल-बेरूनी लिखते हैं,

१. E. Sachau द्वारा अंग्रेजी अनुवाद "Al-Beruni's India", Vol. I. pp. 197-98.

occurs in this part of the world (in Panjab), we observe that a similar name is used also to the north of the above mentioned mountain chains, for the rivers which flow thence towards the north, after having united near Tirmidh and having formed the river of Balkh, are called 'the union of the seven rivers'. The Zoroastrians of Sogdiana have confused these two things; for they say that the whole of the seven rivers is Sindh, and its upper course Baridish". [ईरानी परंपरा :- जिस प्रकार दुनिया के इस क्षेत्र (पंजाब) में 'पाँच नदियों का संगम' यह नाम प्रचलित है, उसी प्रकार ऊपर कही पर्वतीय श्रृंखलाओं के उत्तर दिशा में भी एक वैसा ही नाम हमें लगता है; क्योंकि, उस तरफ उत्तर को बहने वाली नदियों का 'टिर्मिड' के पास संगम होकर उनकी बालूक नदी होने पर उन्हें 'सात नदियों का संगम' नाम दिया गया है। सोगडियाना के झोरास्ट्रियन लोगों ने इन दो बातों में भ्रम किया है, क्योंकि वे कहते हैं कि उन सात नदियों के संगम से हुई नदी सिंध है तथा उसका ऊपरी प्रवाह बारीदीश है<sup>१</sup>। और इसी के साथ अनुवादक डॉ. सचौ अपनी यह टिप्पणी देते हैं, "The Union of the seven rivers :- This tradition apparently refers to the 'hapta hendu' of the Avasta, Vendidad i. 73". [सात नदियों का संगम :- इस परंपरा का संबंध अवेस्ता, वेदिदाद 1-73 के 'हप्त हेंडू' से दीखता है]<sup>२</sup>

अल-बेरूनी का यह स्पष्टीकरण बताता है कि, झेंद अवेस्ता के 'हप्तहिंदु' (हप्तहेंडू) का संबंध हिमालय के उत्तर में बहने वाली नदियों से होकर, भारतवर्ष से ('सप्तसिंधु' शब्द से केवल उच्चार साम्य के अलावा) कोई संबंध नहीं। हिमालय के उत्तर की उन नदियों में प्रमुख नदी अमू-दर्या है, जिसका यूरोपीय नाम Oxus तथा अरबी नाम जयहून (या जिहून) है। उसे बालूक, पुंज, गुंट, कोकचा, कुंडुर आदि नदियाँ आकर मिलती हैं। यह है वह 'हप्तहिंदू' प्रदेश, जिसका गलत संबंध भारत से लगाया जा रहा है। इस भूल के पूर्व उल्लेखित उदाहरणों के अलावा दो और उद्धरण देखिये। डार्मेस्टर (पूर्वोक्त) वेदिदाद के उस श्लोक का अनुवाद 'the fifteenth of the good lands and countries which I, Ahura Mazda, created, was the Seven Rivers' ऐसा देकर, स्वयं ही 'the Seven Rivers' ('हप्तहिंदू') पर टिप्पणी देते हैं, "the basin of the affluents of the Indus, the modern

१. सोगडियाना = प्राचीन ईरानी नाम Suguda (देखिये Darmesteter's Translation of Vendidad, 'Sacred Books of the East,' Vol. IV, P.5) = आधुनिक समरकंद (उक्त P.2.)

२. इसमें उल्लेखित संख्या ७३ F. Spiegel's Avesta, I, Wien, 1953, P.5 में होकर, यह वेन्दिदाद का ऊपर उद्धृत वचन ही है।



Panjab (=the five rivers)"; [सिंधु का शाखाओं का क्षेत्र, आधुनिक पंजाब (पाँच नदियाँ)]। तथा Martin Haug<sup>1</sup> इस श्लोक के अनुवाद में haptahindu का अर्थ "(the land of) seven rivers" देते हैं, और फिर स्वयं ही उसमें '(India)' जोड़ देते हैं।

ध्यान देने लायक है कि, वेदिदाद के उस अध्याय में 'हप्तहिंदू' के अलावा और भी कुछ ऐसे भौगोलिक नाम हैं, जो संस्कृत नामों के समान होने पर भी उनका संबंध भारत से नहीं अपितु भारत के बाहर के प्रदेशों में लगाया जाता है। आहुर मज्द द्वारा निर्मित छठे उत्तम प्रदेश का नाम वेन्दिदाद में Haroyu दिया है, जो भारतीय शर्यू नदी के नाम से मिलता-जुलता है। फिर भी उस 'हरोयू' को अफगानिस्तान में Hari नदी का क्षेत्र (या Herat) माना गया है।<sup>2</sup> इसी प्रकार दसवें प्रदेश का नाम वेदिदाद में Herahvati बताया है, जिसका भारत की सरस्वती नदी के नाम से स्पष्ट साम्य है; किन्तु उस 'हरावती' को भी कुछ लेखक<sup>3</sup> कझाकिस्तान की 'सरदर्या' (जिसे Iaxartes भी कहते हैं), तो कुछ लेखक<sup>4</sup> आधुनिक Harut मानते हैं। अतः वेदिदाद के 'हप्तहिंदू' को भी भारत में मानने की कोई आवश्यकता नहीं।

एक लेखक 'हप्तहिंदू' के बारे में अल-बेरूनी के स्पष्टीकरण पर ध्यान आकर्षित कर लिखते हैं,

"The remark about confusing two countries under the name of the land of five or seven rivers deserves further investigation". (J.C. Tavadia in "Indo-Iranian Studies", 1950, p. 67). [पाँच या सात नदियों के प्रदेश के नाम पर दो देशों में किये घोटाले के कथन पर अधिक जाँच आवश्यक है]। एक अन्य लेखक स्पष्ट कहते हैं, "The expression 'hapta hindu', the Iranian (Vendidad, 1.18) equivalent of 'sapta sindhu', further added to this confusion. The western writers believed that this expression referred to the Panjab. In support of this they point out Ry. VIII. 24, 27, where 'sapta sindhu' is used, according to them, as a place name referring to Panjab. We should remember here that the 'hapta hindu' of the Avesta is actually a name of a mythical land encircled by the mythical rivers" (B.R. Sharma, article

१. "The Parsis - Essays on their sacred Language, Writings and Religion", P.230

२. देखिये Darmesteter, पूर्वोक्त, Vendidad, P.7

३. देखिये "Study of Indian History and Culture" Vol. 1 P. 147

४. देखिये Darmesteter, पूर्वोक्त, Pages 2, 7.

Deccan College Research Institute, Poona, p. 290). [सप्तसिंधु के समानार्थी ईरानी 'हप्तहिंदू' शब्द, जो वेदिदाद १-१८ में आया है, ने इस भूल को और बढ़ाया। पश्चिमीय लेखकों ने सोचा कि यह शब्द पंजाब के लिये है। इसके समर्थन में वे ऋग्वेद ८-२४, २७ का आधार देते हैं, जहाँ 'सप्तसिंधु' शब्द उनके अनुसार पंजाब का एक स्थलवाचक नाम है। हमें यहाँ ख्याल रखना चाहिये कि, अवेस्ता का वह 'हप्तहिंदू' वस्तुतः पौराणिक नदियों से घिरा एक पौराणिक प्रदेश है]। जहाँ इसमें वेदिदाद के 'हप्तहिन्दू' का संबंध पौराणिक नदियों से बताया है, वहाँ अल-बेरूनी हिमालय के उत्तर तरफ की वास्तविक नदियों से बताते हैं; किन्तु दोनों की राय में उस 'हप्तहिंदु' का भारत से कोई संबंध नहीं।

## झेंद अवेस्ता के पाठ में कुछ अतिरिक्त शब्द

झेंद अवेस्ता के कुछ संस्करणों में (उदाहरणार्थ N.L. Westergaard द्वारा संपादित) वेदिदाद १-१९ में 'हप्तहिंदू' के साथ छः शब्द जोड़ दिये जाते हैं, जिनसे यह भ्रम और बढ़ता है कि वेदिदाद में भारत का उल्लेख है। Martin Haug (पूर्वोक्त, P.230) वे शब्द रोमन लिपी में इस प्रकार दर्शाते हैं hacha ushastara Hindva avi daoshatarem Hindum, तथा उसका यह अनुवाद देते हैं, "from the eastern (lit. more morning) Hindu to the western (lit. more evening) Hindu". वस्तुतः अवेस्ता के 'हिन्दु' शब्द का अर्थ "A big river, a sea, a natural frontier formed by a big river or sea". (बड़ी नदी, सागर, किसी बड़ी नदी या सागर से हुई नैसर्गिक सीमा) ऐसा है।<sup>1</sup> किन्तु Martin Haug के समान कई लेखक उसका अर्थ यहाँ भारत देश करते हैं; तथा उस दृष्टि से उक्त लिप्यंतर एवं अनुवाद में उस शब्द का अद्याक्षर बड़ा (H) दिया भी है, ऐसा प्रतीत होता है।

किन्तु Paul Thieme (Article in W.B. Henning Memorial Volume, London, 1970, pp. 447-450) ने कहे अनुसार, अन्य लेखक जो अवेस्ता के 'हिन्दू' शब्द का सही अर्थ करते हैं, उन छः शब्दों को इस प्रकार लिखते हैं haca usastara hinduua auui daosastarem hindum; तथा स्वयं पॉल थीम, अवेस्ता के 'हिंदु' शब्द का भारत से संबंध नहीं यह दर्शाते हुए उन छः शब्दों का यह अनुवाद देते हैं, "from the eastern frontier to the western frontier" (पूर्वीय सीमा से पश्चिम सीमा तक)। यह भारत का कोई प्रदेश न होकर, हिमालय के उत्तरी ओर का 'हप्तहिंदू' प्रदेश है।

१. यह जानकारी मुझे कृपया Dastur Dr. Firoze M.Kotwal, Ph. D., High Priest, H.B. Wadia Atash Bahram (J.Shankarseth Road, Bombay) द्वारा एक पत्र से (२७-२-८४) दी गई है।



कन्तु इसक अलावा, व छः शब्द वादवाद क प्रमाणित पाठ क नही ह । स्वय वेस्ट रगार्ड कहते हैं कि वे शब्द कुछ पोथियों में नहीं पाए जाते हैं K.F. Geldner द्वारा प्रकाशित संस्करण में वे नहीं हैं । डर्मस्टेटर (पूर्वोक्त) भी उस श्लोक के अंग्रेजी अनुवाद में उन छः शब्दों को समाविष्ट नहीं करते हैं ।

वे छः शब्द कुछ पोथियों में कैसे जोड़े गये? Martin Haug (पूर्व उल्लेखित pp. 52 एवं 94) यह स्पष्टीकरण देते हैं । मूल रचना अवेस्ता भाषा में होने के बाद उस पर पहलवी भाषा में 'झेंद' टीका लिखी गई; उसमें भाष्यकार ने स्वयं के कुछ वाक्य अवेस्ता भाषा में जोड़ दिए । वस्तुतः वे अतिरिक्त कथन मूल रचना के न होकर टीका के अंश थे; किन्तु भाषा-साम्य के कारण वे मूल अवेस्ता पाठ के साथ ही लिखे जाने लगे, ओर कालांतर से उसमें मिल गये । Haug विशेष रूप से कहते हैं (P. 230) कि, वेदिदाद में 'हप्तहिंदू' के साथ जोड़े गये वे छः शब्द इस तरह से बाद में शामिल किये गये हैं । खैर, वह कुछ भी हो, वे शब्द भी, ऊपर कहे अनुसार, असल में भारत से संबद्ध नहीं हैं ।

### भारतीय महिलाओं का अपमान

वेदिदाद के उस 'हप्तहिंदू' का भारत से संबंध लगाना इस देश की महिलाओं के लिये भी भारी अपमानास्पद है । उक्त श्लोक के उत्तरार्ध में कहा है कि आहुर मझ्द ने वह प्रदेश निर्माण करने के बाद, दुष्ट कलि पुरुष ने वहाँ की महिलाओं में एक गंभीर विकृति पैदा कर दी। डर्मस्टेटर उसका यह अनुवाद देते हैं, "Thereupon came Angra Mainyu, who is all death, and he countercreated by his witchcraft abnormal issues in women and excessive heat" । तथा M. Haug अनुवाद करते हैं: "Thereupon, as an opposition to it, Angremainush, the deadly, formed untimely menstruations, and irregular fever" (पूर्वोक्त P. 230) । सम्पूर्णानन्द भी लिखते हैं (पूर्व उल्लेखित पृ. ६१) "तब मृत्युस्वरूपी अग्रमन्यु ने अपनी माया से स्त्रियों में असाधारण प्रसव और भीषण गरमी उत्पन्न की" । इससे अधिक खेदजनक क्या होगा कि, भारतीय विद्वान भी एक ऐसे विदेशी वचन का भारत से व्यर्थ संबंध बताते हों, जिसमें महिलाओं में इस प्रकार की (वास्तविक या काल्पनिक) विकृति दर्शायी है ?

### मूलभूत शाब्दिक घोटाला

प्राचीन ईरानियों का 'हिंदु' शब्द भारत के लिये था, इस धारणा की भ्रामकता अब पाठकों को स्पष्ट हुई होगी । ईरान की अवेस्ता भाषा में संस्कृत 'सिंधु' के समान 'हिन्दु' शब्द था, किन्तु वह एक नदी या समुद्र के अर्थ का होकर, भारत या भारतीयों के लिये नहीं था । दूसरी ओर, भारत के लोगों ने स्वयं को 'हिंदू' नाम दिया, किन्तु वह 'सिंधु' का रूपांतर न होकर चन्द्रवाचक 'इंदु' पर आधारित था ।

(उक्त P. 1),

"Many attempts have been made, not only to identify these sixteen lands, but also to draw historical conclusions from their order of succession, as representing the actual order of the migrations and settlements of the old Iranian tribes. But there is nothing in the text that would authorise us to look to it even for legendary records, much less for real history. We have here nothing more than a geographical description of Iran; such as might be expected in a religious work like the Vendidad, that is to say, one that contains mythical lands as well as real countries." [इन सोलह प्रदेशों की निश्चित पहिचान करने के, तथा इतना ही नहीं अपितु उनका अनुक्रम प्राचीन ईरानी टोलियों के देशांतर का एवं बसाहत करने का प्रत्यक्ष क्रम दर्शाता है यह मानकर, इस अनुक्रम से ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालने के, अनेक प्रयास किये गये हैं । किन्तु मूल लेख में ऐसा कुछ भी नहीं जिससे हम उसमें अधिकृत तौर पर प्रमाणित दंतकथा देख सकते हैं, प्रत्यक्ष इतिहास देखना तो और भी कम । उसमें हम पौराणिक प्रदेश एवं उन्हीं के साथ वास्तविक प्रदेशों का जिसमें उल्लेख है ऐसे वेदिदाद समान धार्मिक ग्रंथ में जो देखने की अपेक्षा कर सकते हैं ऐसे ईरान के भौगोलिक वर्णन के अलावा और कुछ प्राप्त नहीं] ।

इस समुचित मूल्यांकन के अनुसार वेदिदाद का वह प्रथम अध्याय 'एक धार्मिक रचना में अपेक्षा की जाती है उस तरह का मात्र ईरान का एक भौगोलिक वर्णन' है । इसी से उसमें भारत का कोई उल्लेख होने की धारणा का खंडन हो जाता है । वेदिदाद सहित झेंद अवेस्ता प्राचीन ईरान का झोरारिस्ट्रियन धर्मग्रंथ है; और भारत का कोई भी भाग कभी भी उस धर्म के प्रभाव में न होने से, वेदिदाद में भारत के किसी भी प्रदेश का उल्लेख होने का कोई कारण नहीं था । उस अध्याय में निर्दिष्ट सोलह प्रदेशों में प्रथम प्रदेश 'The Airyana Vaego by the (river) Vanguhi Daitya' तथा अंतिम प्रदेश 'The land by the floods of the (river) Rangha' है । 'ये दोनों नदियाँ स्वर्ग से पृथ्वी पर आईं, एक पूर्व में तथा दूसरी पश्चिम में, देवी नदिया हैं' (उक्त pp. 2, 3) । यह प्राचीन ईरानियों की पौराणिक धारणा थी; और उन दो नदियों के बीच के भू-भाग में (पश्चिम) भारत का कोई प्रदेश मानने का कोई समर्थन नहीं । किन्तु फिर भी अवेस्ता का 'हिन्दू' शब्द भारतीयों के 'हिन्दू' नाम के समानार्थी मानने की भूल से छुटकारा न पाने के कारण डर्मस्टेटर लिखते हैं कि, वेदिदाद के उस अध्याय में उल्लेखित 'हप्तहिंदू' प्रदेश 'certainly' (निश्चित रूप से) भारत का पंजाब है ।<sup>1</sup>

१. अपनी इन दो परस्पर विरोधी भूमिकाओं का समन्वय करने के प्रयास में डर्मस्टेटर ने प्रस्तुत की एक असंभव-सी कल्पना आगे बताई है ।



easternmost river' (पूर्व दिशा का आखिरी नदी) भारत का सिंधु समझन का काई कारण नहीं। स्वयं डार्मिस्टर लिखते हैं (P.3) कि ऑक्सस नदी (जो बाल्क से मिलती है) का एक समय सिंधु नदी से घोटाला किया जाता था; और वे भी यहाँ वही भूल करते हैं।

किन्तु A.V.W. Jackson ("Cambridge History of India", Vol. I.p. 235) इससे भी आगे जाकर, उस श्लोक के अनुवाद में ही river शब्द हटाकर India लिख देते हैं, और वह मात्र पूर्व दिशा में ही नहीं अपितु पश्चिम में भी। "The long arms of Mithra seize upon those who deceive Mithra; even when in eastern India he catches him, even when in Western (India) he smites him down....."। जहाँ मूल श्लोक में hindvo यानी 'नदी के पास' कहा है, यह अनुवाद वह पूरा श्लोक एक सिरे से दूसरे सिरे तक (शत्रु स्वरूप) भारत से संबद्ध बताता है। और फिर Jackson का अंधा आधार देकर एक अन्य लेखक A.L. Olmstead ("History of the Persian Empire-Achaemenid Period", P. 145, footnote) लिखते हैं: "In the moderately early Mithra Yasht, 10:104, the god smites the foe in eastern and western India, as does Sraosha in imitation, Yasna 57 : 27"; इसका आशय यह कि, यश्ट १०-१०४ के अनुसार देव पूर्वीय भारत में तथा पश्चिमीय भारत में दुश्मन का नाश करता है, तथा वैसा ही करने का यशन ५७-२७ में कहा है। किन्तु इस श्लोक में भारत को इस तरह (और वह भी देवताओं के दुश्मन रूप) घसीटना अवेस्ता में 'नदी' वाचक 'हिंदू' शब्द का गलत अर्थ लगाना मात्र है; तथा वह नदी, चाहे पूर्व में हो या पश्चिम में, India (भारत) की मानने का कोई कारण नहीं।

जहाँ तक प्रश्न ५७-२७ का सवाल है, L.H. Mills ("Sacred Books of the East", Vol. XXXI) उसका यह अनुवाद देते हैं, "We worship Sraosha (Obedience) the blessed, whom four racers draw in harness, white and shining... which from both the weapons (those on this side and that) bear the good Obedience the blessed, plunging forward in their zeal, when he takes his course from India on the East, and when he lights down in the West..." इसमें India (भारत) का प्रत्यक्ष नाम लिया है। जैक्सन के अनुवाद में भी वैसा ही है। किन्तु हमारी अभी तक की चर्चा से स्पष्ट होगा कि यह भी अनुवादकर्ता का मूल पाठ में निराधार हस्तक्षेप है। यशन ५७-२७ Olmstead के अनुसार यश्ट १०-१०४ का अनुकरण, तथा Jackson के अनुसार पुनरावृत्ति है; अतः चूँकि यश्ट १०-१०४ का भारत से संबंध नहीं, उस यशन श्लोक का भी भारत से संबंध नहीं है।

भारत स गलत सबद १कय गुछ अन्य पन  
झेंद अवेस्ता में अन्यत्र भी जहाँ 'हिन्दु' शब्द, या उससे बना कोई शब्द, आया है, वहाँ विद्वानों को व्यर्थ भारत का उल्लेख देखने का मोह होता रहा है। इसका एक उदाहरण देखिये। 'यश्ट १०-१०४' में मिथ्रा ने शत्रुओं पर हमला करने की बात कही है। इस श्लोक का Ilya Gershevitch ("The Avestan HYMN TO MITHRA" with an Introduction, Translation and Commentary, pp. 124-25) ने दिया पाठ इस प्रकार है -

".....  
ya ci u astaire hindvo gdurvayeite  
ya ci daosataire niyne  
....."

इसमें hindvo शब्द आया है, जो मात्र 'नदी' के अर्थ में है, भारत के लिये नहीं; तथा इस दृष्टि से उक्त लेखक ने उस श्लोक का यह अनुवाद दिया है "(Grassland magnate Mithra we worship, whose long arms reach out to catch the violators of the contract :) if (the violator is) by the eastern river he is caught, if (he is) by the western (river) he is struck down; (whether he is at the source of the Ranha, whether he is in the middle of the earth), Mithra will be seizing him still, reaching round him with his two arms)"। इसका आशय यह है कि, मिथ्रा सर्वशक्तिशाली होकर दुश्मन पूर्व तरफ की नदी पर हो या पश्चिम तरफ की नदी पर - वह कहीं भी हो - मिथ्रा उसे अपने बलवान हाथों से पकड़ लेता है। यह अनुवाद 'हिन्दु' का अर्थ यहाँ 'नदी' है यह स्पष्ट करने के लिए टिप्पणी भी देते हैं, "On 'hindu'..... 'river' cf. Markwart, Wehrot und Arang, 132 sq." (पूर्वोक्त P.253)

किन्तु अन्य लेखक इस श्लोक पर भी भारत का उल्लेख थोपते हैं। डार्मिस्टर यह अनुवाद देते हैं "..... Mithra, the lord of wide pastures.....sleepless and ever awake.....whose long arms, strong with Mithra strength, encompass what he seizes in the easternmost river and what he beats with the westernmost river....." (Sacred Books of the East, Vol. XVIII). वैसे तो इस अनुवाद में भारत का नाम नहीं है; किन्तु डार्मिस्टर अपनी ओर से the easternmost river शब्दों पर एक टिप्पणी में "the Sind" यह स्पष्टीकरण देते हैं। वस्तुतः (इन नदियों को मात्र पौराणिक के बजाय वास्तविक कहा तो भी), अल-बेरुनी ने दिया स्पष्टीकरण (एवं बाल्क नदी का सिंधु से



## पर्सेपोलिस का शिलालेख

एक ओर प्राचीन ईरानी उल्लेख, जो भारत के लोगों के लिये 'हिन्दू' रूप से है ऐसा कहा जाता है, सम्राट दारियस (दारिया) के शिलालेखों में देखा जाता है। ईसा पूर्व पाँचवीं सदी में ईरान पर (Achaemenid वंश के) राजा Darius का शासन था। उसके शिलालेखों में उसके साम्राज्य के प्रान्तों के नाम दिये हैं। बेहिस्तून के शिलालेख में गंधार का नाम है। तथा पर्सेपोलिस के शिलालेख में, एवं Naqsh-e Rostam में दारियस के कबर पर खुदे लेख में, Hidas (Hindus/Hindush) का नाम है; उसका अर्थ पश्चिम भारत किया जाता है, जिस पर दारियस ने बेहुस्तून के शिलालेख के बाद किसी समय आक्रमण किया माना जाता है।

किन्तु वह 'हिन्दुस' शब्द वेदिदाद के 'हप्तहिंदू' के ही समान है, और पर्सेपोलिस शिलालेख में दारियस धर्मग्रंथ अवेस्ता (जिसका प्रथम खंड वेन्दिदाद है) के सर्वेश्वर आहुर मज़द की विशेष रूप से कृपा चाहते हैं। उस शिलालेख के अंग्रेजी अनुवाद से यह उद्धरण प्रस्तुत है। (Olmstead, p. 175)

"Great Ahuramazda, who is chief of the gods, who has established Darius as king, he has given to him the kingdom, By the favor of Ahuramazda, Darius is king. Says Darius the king : This land Parsa, which Ahuramazda has granted me, which is beautiful, possessing good horses and good men, by the favor of Auramazda and of me, Darius the king, it has no fear of an enemy..... says Darius the king : By the favor of Ahuramazda, these are the lands which I hold, together with this Persian army which fears me : to me they brought tribute....."

इसमें दारियस कहते हैं कि आहुर मज़द की कृपा से उन्होंने Parsa (Persia ईरान) का राज्य प्राप्त किया है; आहुर मज़द की कृपा से ये सारे प्रदेश तथा ईरान की सेना उनके अधीन है। पूर्व प्रकरण में बताये अनुसार झेंद अवेस्ता में स्वयं आहुर मज़द के वचन में (तथा कहीं अन्यत्र भी) 'हिन्दु' शब्द आया है, जिसका भारत में संबंध नहीं। अतः उक्त शिलालेख में आहुर मज़द के प्रति व्यक्त किये श्रद्धापूर्ण उद्गार देखते, उस शब्द का वहाँ भी वैसा ही आशय देखना युक्तिसंगत होगा। बल्कि कुछ लेखकों ने

उसका अर्थ एक नदी (या समुद्र) है इसका कुछ भी विचार न करते, सर्वप्रथम (तथा एकमेव) कल्पना भारत देश की आती है। इसका एक और उदाहरण प्रस्तुत है। यश्ट 8-32 में us-hindava पर्वत, जो पौराणिक समुद्र Vouru-Kasha में स्थित है, का उल्लेख है। इस पर्वत के नाम का अनुवाद कुछ लेखक "Beyond (or above) India" करते हैं; किन्तु अन्य लेखक "the mountain from which the rivers arise" ऐसा करते हैं।<sup>1</sup> Paul Thieme भी (पूर्व उल्लेखित P.449) उस नाम का भारत से संबंध नकारते हुए लिखते हैं, "Yt. 8.32 : The mountain situated in the middle of the Vourakasa lake is called 'ushinava'- hardly because it is 'situated beyond India' (thus Bartholomae), but rather because it arises 'beyond the natural frontiers' of the world (presumably formed, to one side, by the waters of the lake Vourukasa), and thus cannot be reached by man"। स्पष्ट है कि उस पर्वत के नाम का भारत से संबंध दर्शाने वाला अनुवाद अवेस्ता शब्द hindu/hindava के अर्थ के बारे में बहुप्रचलित भ्रम का परिणाम है।<sup>2</sup>

जहाँ अवेस्ता का 'हप्तहिंदू' क्षेत्र कुछ लेखकों के अनुसार पश्चिम भारत का प्रदेश है, तथा कुछ अन्यो के अनुसार भारत के बाहर का उत्तर-पश्चिम प्रदेश है, वहाँ एक तीसरे प्रतिपादन के अनुसार उसमें ये दोनों प्रदेश तथा मध्य एशिया का और भी प्रदेश समाविष्ट है। इस आशय के अनुसार अवेस्ता की 'हप्तहिंदू' भूमि, जो ऋग्वेदीय 'सप्तसिंधू' थी, का विस्तार आधुनिक तुर्कस्तान एवं ईजिप्ट लेकर, सीरिया, पॅलेस्टाइन, ईरान, अफगानिस्तान, अज़रबैजान, ताझिकीस्तान, उज़बेक आदि का समावेश करते हुए भारत के सिंधु, पंजाब तथा काश्मीर तक फैला हुआ था।<sup>3</sup> तथा इस दृष्टि से इन सात नदियों के लिये पश्चिम को युफ्रेटिस से पूर्व में सिंधु तक के नाम दिये जाते हैं। यदि यह आशय लिया, तो ईरानी शब्द 'हप्तहिंदू' विशेष रूप से भारत के लिए था, यह कहना और भी असंभव होगा, क्योंकि उस हालत में कौकेशस पर्वत (एवं कास्पियन समुद्र) से सिंधु नदी तक के सारे देशों के लोगों को हिंदु कहा गया होता, जो किसी का प्रतिपादन नहीं है।



1. देखिये "Cambridge History of India", Vol. I, p.326.
2. अवेस्ता के 'हिन्दु' शब्द के बारे में यह भ्रम देखते यहाँ एक खुलासा करता हूँ। प्राचीन भारतीय ग्रंथ 'ब्रह्मसिद्धांत' का अरबस्तान में काफी प्रचार हुआ था। अल-बेरूनी उसका कई बार उल्लेख करते हैं; उनकी रचना के अंग्रेजी अनुवाद में वह 'सिद्धांत' शब्द (उसके अरबी उच्चारानुसार) sindhind, और कहीं कहीं तो "SIND HIND" छपा है। किन्तु उसका 'सिंध से हिंद' इस तथाकथित रूपांतर से कोई संबंध नहीं।
3. "Study of Indian History and Culture", Bombay, Vol. I. 1988, P.147.



ही माने हैं।<sup>1</sup> यदि ऐसा है, तो वह Hindu (Hindus) भी भारत के बाहर का, कई नदियों से युक्त या समुद्र के पास, कोई प्रदेश होना चाहिये। दारियस के ही ग्रन्थों में ऐसा एक अन्य उदाहरण (अंग्रेजी अनुवाद के अनुसार) "The Peoples of the Sea" नाम के प्रदेश में उपलब्ध है (देखिये Clement Huart, पूर्व उल्लेखित P.74)।

फिर भी, पर्सेपोलिस शिलालेख में दी प्रदेशों की सूची में India नाम समाविष्ट कर Erich Schmidt ("Persepolis", Vol. I, 'Structures, Reliefs, Inscriptions. p.39) उस लेख के अंग्रेजी अनुवाद में लिखते हैं, "India (Hindus=Sind=Indus Valley) also enumerated in the list of nations, had become a satrapy sometime before 513". किन्तु उस शिलालेख के Hindus को भारतीय 'सिंध' प्रदेश क्यों मानना चाहिये? उस शिलालेख में ही एक प्रदेश का नाम Harauvatis है, जिसका भारत की नदी सरस्वती के नाम से साम्य होते हुए भी उसे (भारत के बाहर) Arachosia माना गया है। इसके अलावा, पूर्व प्रकरण में मैंने वेदिदाद में प्राप्त कुछ अन्य भौगोलिक नाम भी उद्धृत किये हैं, जिनका भारतीय नामों से उच्चार साम्य होने पर भी, उन्हें भारत के बजाय अन्य देशों से संबद्ध माना गया है। अतः दारियस के लेखपटों का Hindus शब्द भारत के 'सिंध' के उच्चार से साम्य रखता है यह उसे भारत का सिंध प्रदेश मानने का पर्याप्त कारण नहीं है। फिर जहाँ इस विषय पर लिखने वाले प्रायः वह शब्द Hindus/Hindus ऐसा उद्धृत करते हैं, उन शिलालेखों में Hindus है।<sup>1</sup> उसे Hindus माना, तो भी ऊपर कहे अनुसार वह भारतीय प्रदेश मानना आवश्यक नहीं।

किन्तु दारियस की कबर पर मुख्य लेख के वाचन में उस Hindus को एक बार भारतीय प्रदेश मान लेने पर, स्वाभाविक ही कबर की बाहरी दिवाल पर चित्रित Throne-bearers and Tribute-bearers (सिंहासनवाहक एवं खंडणीदेयक) व्यक्तियों की आकृतियों की पहचान पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। यद्यपि उनमें से कई आकृतियाँ काफी नष्ट (अस्पष्ट) हो चुकी हैं, कबर के मुख्य लेख पर जिस क्रम से देशों के

१. देखिये Olmstead, P. 145, footnote 46. तथा, "About 512 Darius descended into the Punjab (HaptaHindu) and conquered extensive territory, which was made into a new satrapy, that of India, which is not mentioned in the Behistun inscription, but appears in the list at Persepolis" (Clement Huart, "Ancient Persia and Iranian Civilization" P.55).

२. देखिये Roland G.Kent's article "Old Persian Texts", Journal of Neareastern Studies University of Chicago, Vol, 1943, pp. 302-06.

किया है। अतः चूँकि मुख्य लेख में Hindus तेरहवा देश है, और वह भारत के लिये मान लिया गया, तेरहवीं सिंहासनवाहक की मानव आकृति Indian (भारतीय) कही जाती है।<sup>1</sup> इस आकृति में दाढ़ी तथा पीठ की ओर बालों का झब्बा बताया है। जहाँ तक मैं सोचता हूँ Hindus=Sind (हिण्डु स=सिंध) यह गृहीत समीकरण अलग रखा, तो वह आकृति ईसा पूर्व पाँचवी सदी के आम भारतीय की मानना आवश्यक नहीं।

पर्सेपोलिस शिलालेख में २६ देशों के नाम दिये हैं;<sup>२</sup> जिनमें Hindus तेईसवें क्रमांक पर है। Naqsh-i-Rustam के लेख में वे २६ नाम (क्रम तथा कुछ नामों के अक्षरों में बदल के साथ एवं Hindus तेरहवें स्थान पर दर्शाते हुए) देकर, चार और देश दिये हैं।

इन संदर्भ में Old Persian (पुरानी ईरानी), Elamite तथा Akkadian इन तीन भाषाओं में लिखे इन प्राचीन लेखों के अनुवाचन में तथा अर्थ लगाने में आने वाली कठिनाई पर भी ध्यान आवश्यक है। कैमेरॉन<sup>३</sup> प्रत्यक्ष शिला एवं उसके उत्कृष्ट छ 'याचित्रों' का सूक्ष्म अध्ययन कर लिखते हैं, 'पर्सेपोलिस शिलालेख में "...paraauvaiya" ऐसा पढ़ा गया शब्द" ... para dara-ya" ऐसा पढ़ना चाहिये; जिससे उसका प्रचलित आशय मूलतः भिन्न हो जाता है। इसी प्रकार, शिलालेखों में निर्दिष्ट प्रदेशों की पहचान के विषय में Roland G.Kent (P.304) कहते हैं कि, Maka देश दक्षिण बलूचिस्तान का Makran या फिर अरबस्तान में ओमान की खाड़ी के दक्षिण का Macae प्रदेश हो सकता है।

शिलालेखों में कुछ प्रदेश, उनके विशिष्ट नामों के बजाय, उनके स्थान से दिग्दर्शित हैं; जैसे पर्सेपोलिस शिलालेख में तेरहवां देश Dahyavaitya para draya (also deciphered as Dahayaava tayaa para daraya) है, जिसका अर्थ "The lands that are beyond the sea" है।<sup>४</sup>

१. देखिये Erich Schmidt, "Persepolis", पूर्व उल्लेखित, Vol. III, "The Royal Tombs and other Monuments", Figure 45 and the facing table.
२. देखिये Roland G.Kent's article (पृ.३.)
३. G.E. Cameron (Article, "Darius Egypt and 'the Lands beyond the Sea', "Journal of Near Eastern Studies, Vol. II. PP. 307-313).
४. देखिये Roland G.Kent, पूर्व उल्लेखित, तथा G.E. Cameron (पृ.३.)



दारियस के शिलालेखों में Hindus का भारत से संबंध लगाने वाले ईसा पूर्व पांचवी सदी का यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस भी उद्धृत करते हैं, जिसकी सुप्रसिद्ध रचना "History"<sup>१</sup> में ईरान के सम्राट दारियस की भी हकीकत है। हेरोडोटस लिखते हैं कि 'Indians' यह दारियस का बीसवां प्रान्त हुआ था। विद्वान प्रायः उसका संबंध दारियस के शिलालेखों के Hindus से लगाते हैं। इस दृष्टि से A.L. Basham लिखते हैं<sup>२</sup> -

"In an inscription of about 519 B.C. Darius I, the third of the Achaemenid emperors, claims possession of Gandhar, and in a slightly later inscription he also claims Hindush, or 'India', which, according to Herodotus, became the twentieth satrapy of the Persian empire. The extent of the Persian province of Hindush is not certain, but it probably included much of the Panjab". ['ईसा पूर्व करीब ५१९ के शिलालेख में तृतीय अँकेमेनिडवंशी सम्राट प्रथम दारियस गंधार पर कब्जा बताता है; और कुछ थोड़े ही समय बाद के शिलालेख में Hindus या India पर भी अपना स्वासित्व बताता है, जो हेरोडोटस के अनुसार उस ईरानी साम्राज्य का बीसवां प्रान्त हुआ। उस ईरानी प्रांत Hindush का विस्तार कितना था यह निश्चित नहीं, किन्तु संभवतः उसमें पंजाब का काफी प्रदेश था']।

इसमें गृहीत है कि, जिसे हेरोडोटस "the satrapy of Indians" कहते हैं वह दारियस के शिलालेखों का Hindush था। इसी प्रकार Olmstead (पृ. उ. P.145) दारियस प्रथम के 'Conquest of Western India' ('पश्चिम भारत पर विजय') की चर्चा करते हुए लिखते हैं "Western India was subdued and sometime before 513 had been formed into the satrapy of Hindush"; और इसके लिये वे हेरोडोटस का आधार देते हैं। इसमें भी यही गृहीत है कि हेरोडोटस ने the satrapy of Indians का उल्लेख उपरोक्त शिलालेखों में दिये Hindush के आधार पर किया। यह कहाँ तक सही है?

पर्सपोलिस लेख में कुल 26 प्रान्त दिये होकर Hidus तेईसवां है; तथा Naqsh-i-Rustam के लेख में ३० प्रांत होकर Hidus तेरहवां बताया है। हेरोडोटस ने अपनी रचना सम्राट दारियस के निधन के कुछ समय बाद लिखी; और उसने उस साम्राज्य को बीस प्रान्तों में विभाजित कर 'Indians' का प्रान्त आखिरी बताया है, जिसे वे इस प्रकार दर्शाते हैं, "The Indians, who are more than any other

1. English Translation by G. Rawlinson in 'The Great Books of the Western World', (Vol. 6).

2. "The Wonder than was India", p. 48.

satrapy". (Rawlinson G.B. W. W. p. 110) ['इंडियन्स, जो हमें ज्ञात किसी भी अन्य लोगों से अधिक है.... यह बीसवा प्रान्त था']। 'इंडियन्स' के बारे में हेरोडोटस का यह सांख्यिक अंदाज समग्र Indo के लिये होगा, या उन्हें भारत के विषय में (आगे बताये अनुसार) जो कुछ भ्रामक कल्पनाएँ थी उनके संदर्भ में होगा। किन्तु विशेष बात यह कि, हेरोडोटस दारियस के ऊपर चर्चित शिलालेखों का कोई उल्लेख नहीं करते, यद्यपि वे पत्थर पर खुदे एक लेख का उल्लेख करते हैं, जिसमें दारियस ने एक घोड़े का एवं घुड़सवार का उल्लेख किया है जिनकी सहायता से वह ईरान का राजा बना था। दूसरी ओर, हेरोडोटस ने प्रान्तों से सम्राट को प्राप्त होने वाली खंडनीरूप भेंट भी बताई है, जिसका उल्लेख शिलालेखों में नहीं है। वह जानकारी (जो विश्वसनीय हो या न हो), एवं पूरे साम्राज्य का बीस प्रान्तों में विभाजन, हेरोडोटस ने किसी अन्य स्रोत द्वारा प्राप्त किया होगा। उस स्रोत का, तथा उस स्रोत ने हेरोडोटस को the satrapy of 'Indians' की जानकारी देने में कौन-सा विशिष्ट शब्द प्रयुक्त किया होगा इसका हमें पता नहीं।<sup>१</sup> फिर हेरोडोटस की यादी में दिये प्रादेशिक नाम एवं शिलालेखों में दिये नाम इनमें पूरा तालमेल नहीं है। हेरोडोटस ने दिये कुछ नाम शिलालेखों में नहीं है, तथा शिलालेखों में दिये कुछ नाम हेरोडोटस की यादी में नहीं है। "There has been continued discussion of Darius' lists of peoples and complaint against Herodotus that his list of satrapies or financial districts in Book III fails to correspond with them". (Rawlinson, p. 590: see also pp. 110-11) ['दारियस ने दी विभिन्न लोगों की यादियों की चर्चा, तथा हेरोडोटस ने दी प्रान्तों या आर्थिक प्रदेशों की यादी उन यादियों में मेल नहीं खाती इसलिये हेरोडोटस के विरुद्ध शिकायत, सतत होती आ रही है']। अतः हेरोडोटस के satrapy of Indians को दारियस के शिलालेखों के Hidus/Hindush शब्द से समानार्थी मानने स्पष्ट आधार नहीं।

किन्तु प्रश्न किया जा सकता है कि, दारियस के शिलालेखों में Hidus शब्द भारत के लिये न माना, तो भी हेरोडोटस ने बताये दारियस के Indians प्रान्त का क्या स्पष्टीकरण है?

१. एक तुलनात्मक उद्धरण प्रस्तुत है, "...the curious absence of the name Arachosia, Archotai (Pers. Harauevatis), which is in all the Persian lists but nowhere in Herodotus at all. For some reason unknown his source must have used a different name for this country..." A.R. Burn ("Persia and the Greeks", p. 120)



दारियस द्वारा (पश्चिम) भारत पर जात का भार न होना, (जिसका शिलालेखों में Hīdus का अर्थ 'सिंध' (भारत) है इस गृहीत धारणा के अलावा, (जिसका यहां आधार लेना 'जो सिद्ध करना उसी को गृहीत धरने का तर्कदोष' होगा), कोई खानीलायक पुष्टि नहीं है। (दारियस के उस तथाकथित विजय के लिये) "There is no testimony to this beyond the authority of Herodotus and the doubtful voyage of Skylax down to Indus" ("Encyclopedia Asiatica", Cosmos Publications, New Delhi, vol. III, p. 891); [हेरोडोटस का कथन एवं स्कायलैक्स का सिंधु नदी से शंकास्पद जल प्रवास के अलावा इसका कोई प्रमाण नहीं है]। स्कायलैक्स का वह 'शंकास्पद' जल प्रवास दारियस के पश्चिम भारत पर कहे गये विजय के पूर्व हुआ था, और स्कायलैक्स का मूल लेख अब उपलब्ध नहीं है। हेरोडोटस ने दिये वर्णन के अनुसार, दारियस ने स्कायलैक्स सहित कुछ व्यक्तियों को उस नदी के प्रवाह का पता लगाने कहा था 'जिसमें मगरमच्छ होते हैं'; अतः वे यानी Kaspaiyros शहर से आरंभ कर उस नदी में पूर्व तरफ गये, और समुद्र को पहुँच कर वे पश्चिम को मुड़कर अंततोगत्वा ईजिप्ट पहुँचे। इस वर्णन में आधुनिक विद्वान Kaspaiyros को 'गंधार', और उस नदी को सिंधु नदी मानना चाहते हैं। परन्तु ये ही विद्वान बताते हैं कि सिंधु पूर्व तरफ नहीं बहती और न ही उसमें मगर है; इसके अलावा यदि वे प्रवासी सिंधु से गये होते तो वे अंत में ईजिप्ट के बजाय ईरान की खाड़ी में पहुँचते।<sup>1</sup>

स्पष्ट है कि हेरोडोटस का लेखन उनके ईरानी स्रोत ने जो कहा होगा उस पर आधारित है; जिसमें सुदूर के Indo देश के बारे में उन्होंने सुनी हुई धुंधली एवं आश्चर्यकारक बातें भी जोड़ दी दिखती हैं। वे लिखते हैं कि, कुछ भारतीय जिन्हें वे Pataens कहते हैं, उनमें कोई बीमार या वृद्ध होकर मरणासन्न होता है, तो उसे मार डालते हैं और 'उसके शरीर का भोजन करते हैं' (पूर्व उल्लेखित, iii, 99-100)। कुछ लेखकों के अनुसार हेरोडोटस ने कहीं-कहीं Indians का अबिसीनियन लोगों से घोटाला किया भी दीखता है।<sup>2</sup>

अतः यदि हेरोडोटस को प्रमाण मानकर कहा कि, दारियस का पश्चिम भारत के कुछ भाग पर कब्जा था, तो भी उसका संबंध उक्त शिलालेखों के Hindus/Hindus शब्द से लगाना आवश्यक नहीं। वह प्रदेश दारियस ने अन्य किसी प्रान्त के साथ जोड़ा हो सकता है। हेरोडोटस कहते हैं कि, दारियस साधारणतः समीपवर्ती प्रदेशों

१. देखिये A. R. Burn, "Persia and the Greeks", pp. 116-117.

२. देखिये H. G. Rawlinson पृ. उ. प. 19. इसी प्रकार, आद्य ग्रीक भूगोलशास्त्रज्ञ एवं भारत देश का उल्लेख करने वाले सर्वप्रथम ग्रीक लेखक, Hecataeus, एक स्थान पर भारत का आफ्रिका से घोटाला करते हैं (उक्त Footnote 5)।

एक प्रान्त में मिलाता था, यद्यपि कर्मा-कर्मा समापवत्ता जातया क स्थान पर दूसरस्य जातियाँ भी मिला देता था। (पूर्व उल्लेखित iii 89)। दारियस के शिलालेखों का विवेचन करते हुए Roland Kent (pp. 305-06) लिखते हैं कि, Skudra का समावेश dahyava tyapara draya में किया होगा, तथा Margus 'Margiana' को Bactria में मिला दिया है। उल्लेखनीय है कि, हिमालय के निकट कुछ प्रदेश को ईरानियों ने अपनी भाषा में Paropanisus, paruparesanna, Upairisaena ('Higher than the eagle') आदि नाम दिये थे।

**'हप्तहिंदू' तथा 'हिंदुस' का संबंध भारत से न होने के स्पष्ट संकेत**

वेदिदाद का 'हप्तहिंदू' तथा दारियस का Hīdus/Hindush भारत से संबद्ध मानने से डार्मेस्टेटर एक असंभव भूमिका लेने बाध्य हो जाते हैं। वे लिखते हैं -

"If we assume that only lands belonging to the Iranian world were admitted into the list, the mention of the seven rivers would indicate that the first Fargard was not composed earlier than the time when the basin of the Indus became a part of Iran, that is, not earlier than the reign of Darius the First". (पूर्व उल्लेखित, (P. 4) [यदि हम गृहीत धरते हैं, कि उस (वेदिदाद की) यादी में केवल ईरानी जगत के प्रदेशों का ही समावेश था, तो 'हप्तहिंदू' का उल्लेख यह दर्शायेगा कि (वेदिदाद का) वह प्रथम अध्याय सिंधु का क्षेत्र ईरान का भाग बनने पूर्व, अर्थात् दारियस प्रथम के शासन पूर्व, नहीं रचा गया था]।

वेदिदाद में दी वह यादी 'एक धार्मिक रचना में अपेक्षा की जाती है उस तरह का मात्र ईरान का भौगोलिक वर्णन है यह (ऊपर उद्धृत) उचित भूमिका व्यक्त करने बाद, किन्तु उसी के साथ वेदिदाद का 'हप्तहिंदू' शब्द पश्चिम इंडिया के लिये है यह गलत धारणा करने से, डार्मेस्टेटर वेदिदाद का प्रथम अध्याय दारियस के बाद रचा गया ऐसी कल्पना करने को बाध्य ही थे। किन्तु वेन्दिदाद का शुरु का अध्याय, जिसमें सर्वेश्वर आहुर मझद द्वारा श्रेष्ठ प्रदेशों की निर्मित बताई है, सम्राट दारियस (जो आहुर मझद की कृपा से स्वयं को विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ ऐसा कहता है) ने पश्चिम भारत पर तथा कथित विजय प्राप्त करने बाद रचा गया ऐसा वेदिदाद का शायद ही कोई अनुयायी मान्य करे। तथा धर्मग्रंथ अवेस्ता में वर्णित परमदेवता द्वारा 'भूमिनिर्माण' ईरान के एक ऐतिहासिक शासक के सैनिक आक्रमण पर आधारित होगा यह भी क्वचित ही कोई मान्य करे। खास बात यह है कि, डार्मेस्टेटर का यह सारा घोटाला अवेस्ता का 'हप्तहिंदू' प्रदेश भारत में था इस भ्रामक कल्पना का परिणाम है। वस्तुतः (जैसा कि अल बेरुनी ने खुलासा किया भी है) वेदिदाद में निर्दिष्ट 'हप्तहिंदु' प्रदेश ईरान के ही उधर का था, भारत में नहीं।



से कैमरॉन (पूर्व उल्लेखित) के लिये भी समस्या खड़ी होती है। बेहिस्तून का शिलालेख ईसा पूर्व ५१८ में पूर्ण हुआ माना जाता है। दारियस ने, ईजिप्त पर हमले के बाद, नील नदी से लाल सागर तक नहर खुदवाई तथा उसकी रचना के स्मरणलेख खुदवाये (जो सुएज, इस्माइलिया एवं मशकूत में पाये गये हैं); उनमें उसके प्रान्तों की यादी है। उसका संदर्भ देते हुए कैमरॉन लिखते हैं,

"Comparison of this list with that of Behistun shows that India which since the days of Herodotus (iv-44) has been associated with the digging of the canal-Libya (Putaya) and Kush are the only additions... Omitted are Gandhara and 'those on the sea' both of which occurred at Behistun, as well as 'the lands beyond the sea'...." ['इस यादी की बेहिस्तून की यादी से तुलना बताती है कि, इंडिया - जो हेरोडोटस के समय से उस नहर की खुदाई से संबद्ध बताया गया है - एवं लिबिया और कुश, ये देश ही नये जोड़े गये हैं ... गंधार तथा 'समुद्र तट के प्रदेश', जो दोनों बेहिस्तून के लेख में हैं, तथा 'समुद्र पार के प्रदेश' इनका उल्लेख छोड़ दिया गया है।']

यह बताने के बाद कैमरॉन आगे लिखते हैं, The absence of Gandhara would be somewhat surprising, for from it started the campaign into India". ['गंधार का उल्लेख न होना कुछ आश्चर्यजनक होगा, क्योंकि वहीं से भारत पर हमला शुरू हुआ था']। किन्तु कैमरॉन को प्रतीत हुई समस्या उसी धारणा का परिणाम है कि ईजिप्त के शिलालेखों में Hidus भारत के लिये है। यदि वह धारणा हटा दी, तो उन लेखों में भारत का उल्लेख नहीं होगा, और फिर गंधार के अनुल्लेख पर आश्चर्य करने का कारण नहीं रहेगा। युक्तिसंगत आशय यह है कि, Hidus नाम भारत के लिए न होकर, ईजिप्त पर आक्रमण एवं उस नहर की खुदाई बेहिस्तून शिलालेख के पूर्व (तथा गंधार पर कब्जे के एवं पश्चिम भारत पर तथाकथित आक्रमण के पूर्व) हुई थी। स्वयं कैमरॉन कहते हैं कि यह मत प्रायः व्यक्त किया गया है, किन्तु जो उन्हें मान्य नहीं। जहाँ तक हेरोडोटस ने भारत को उस नहर की रचना से संबद्ध बताने का सवाल है, भारत और उसके लोगों के बारे में हेरोडोटस की कैसी भ्रमात्मक कल्पनाएँ थीं यह हमने ऊपर देखा है।

प्रचलित धारणा के विरोध में इन स्पष्ट संकेतों के बावजूद, विद्वानों को झेंड अवेस्ता में या दारियस के शिलालेखों में ईरानी शब्द 'हिन्दू' (या उससे बना कोई अन्य शब्द) देखते ही, वह (संस्कृत सामान्य संज्ञा 'सिंधु' से संबद्ध होकर) मात्र एक नदी (या समुद्र) के लिये सामान्य संज्ञावाचक है इस पर कोई ध्यान न देते, एकदम भारत के 'हिन्दू' लोगों पर दृष्टि डालने का विलक्षण भ्रम होता आ रहा है। इस भ्रम का एक कारण

पश्चिम भारत की एक विशिष्ट विशाल नदी (तथा उसका क्षेत्र) के लिये एक विशेष संज्ञा भी है। जब ईरानियों ने संस्कृत के सामान्य शब्द सिंधु का 'हिन्दु' उच्चार एक नदी के अर्थ में कर उसका अपने भौगोलिक संदर्भ में प्रयोग किया, तब उससे विशिष्ट भारत देश या उस के हिन्दू लोक दिग्दर्शित हुए यह कहना सयुक्तिक नहीं होगा; जब कि उधर भारतीयों ने अपने लिये एक अतिरिक्त संबोधन 'हिन्दु' अपनाया, जिसका आधार (ऊपर तथा आगे भी और स्पष्ट किये अनुसार) अलग ही था। यदि स्वयं भारत में इस प्रकार 'हिन्दू' नाम रूढ़ होने बाद ईरानियों ने भारतीयों को वैसा संबोधित किया हो तो वह अलग बात होगी।

पर्सैपोलिस शिलालेख में, उसका वाचन शुद्ध हो सका है ऐसा मानकर, Hindus शब्द आता है, किन्तु वह भारत के लिये है यह निश्चित नहीं। दूसरी ओर, हेरोडोटस Indians का उल्लेख करते हैं, जो वास्तव में भारतीयों के लिये है, ऐसा माना तो भी उसका संबंध ईरानी शब्द Hidus से हैं यह निश्चित नहीं। ये तो ऊपर उद्धृत आधुनिक लेखक हैं, जो अपने उच्चारविषयक भ्रम एवं गृहीत धारणा के अधीन उन दोनों में आवश्यक संबंध स्थापित करते रहते हैं।<sup>१</sup>



१. इसके एक ओर उदाहरण के लिये देखिए - Rawlinson H. W. पूर्व उल्लेखित p. 17 footnote.



## प्राचीन भारत के दो सिंधु प्रदेश

### Chang Chen का 'Shen-tu' देश कौन सा था?

वेंटर्स के अनुसार (Vol. 1, p.132) ह्यूएन च्वांग ने भारत के नाम की चर्चा करने में उल्लेख किया Shen-tu शब्द चीनी राजप्रतिनिधि Chang Chen ने ईसापूर्व करीब 123 में सर्वप्रथम प्रयुक्त किया था। अनेक विदेशों में भ्रमण कर आने बाद चांग चैन ने अपने सम्राट को दिये निवेदन में कहा कि, Ta-hsia (Bactria or Balkh) देश में उन्हें कुछ लकड़ी के खंभे एवं कपड़ा मिला, जो Shen-tu देश से आया था। वेंटर्स आगे लिखते हैं कि, चीन (एवं यूरोप) के लेखकों ने उस Shen-tu का संबंध India (भारत) से लगाया है; और यह कि उसका जो वर्णन दिया गया है उसके अनुसार उस देश के समीप एक विशेष नदी (या समुद्र) था, एवं उसके निवासी लड़ाई में हाथियों का विशेष उपयोग करते थे।

किन्तु चांग चैन एवं अन्य चीनी लेखकों ने उस देश का Bactria से दक्षिण-पूर्व को (एवं अन्य भी कुछ स्थानों से) जो अंतर बताया है, वह देखते वह Shen-tu देश पश्चिम भारत का सिंधू प्रदेश नहीं हो सकता। न ही उसे सम्पूर्ण भारत भी माना जा सकता है। उसका दिया हुआ कुल मिलाकर वर्णन देखते वेंटर्स अनुमान करते हैं कि, वह भारत के उत्तरपूर्व में ब्रह्मदेश के पास कहीं होना चाहिये। किन्तु उसे Shen-tu (सिंधु) क्यों कहा गया? इसका उत्तर वेंटर्स नहीं दे सके।

अब यह स्पष्टीकरण महाभारत की सहायता से प्राप्त हो रहा है। बहुप्रचलित धारणा यह है कि, प्राचीन भारत में केवल एक सिंधु प्रदेश था—पश्चिम में; तथा महाभारत का जयद्रथ उसी का राजा माना जाता है। किन्तु महाभारत में भीष्मपर्व के आरंभ में भारत के जनपद बताये हैं उनमें 'सिंधु' के दो उल्लेख हैं—

चेदिमत्स्यकुरुषाश्च भोजाः सिन्धुपुल्लिंदकाः ॥९-४०॥

काश्मीराः सिन्धुसौवीरा गान्धारा दर्शकास्तथा ॥९-५३॥

इसमें दूसरे श्लोक में उल्लेखित सिंधु राज्य काश्मीर, गांधार, आदि के पास का होकर निःसन्देह पश्चिम भारत का है; तथा उसका उल्लेख प्रायः सौवीर के साथ किया जाता है। किन्तु श्लोक ४० में बताया सिंधु राज्य कौनसा? और जयद्रथ किसका स्वामी था?

### महाभारत का द्वितीय सिंधु राज्य

महाभारत का आश्वमेधिक पर्व इस पर प्रकाश डालता है। कुरुक्षेत्र युद्ध जीतने

किया। परंपरानुसार यज्ञ का अश्व भारत-भ्रमण करने निकला; अर्जुन सेना लेकर, उसके रक्षणार्थ गया (अध्याय ७३)। घोड़ा राजधानी हस्तिनापुर से प्रथम उत्तर को मुड़ा; और भारत की उत्तर पश्चिम सीमा तक जाकर पूर्व की ओर चला (७३-२२, २३)। वहाँ अर्जुन ने पंजाब की रावी, व्यास एवं सतलज नदियों के क्षेत्र में बसने वाले 'त्रिगर्तो' का पराभव किया। फिर अश्व पूर्व दिशा में और बढ़ता हुआ हिमालय से लगी भारत की संपूर्ण सीमा पार कर प्रत्यक्ष पूर्व-भारत में आया, जहाँ वह प्रागज्योतिषपुर (वर्तमान असम) राज्य पहुँचा। इसका राजा भगदत्त कुरुक्षेत्र पर युद्ध में पांडवों द्वारा मारा गया था; उसका पुत्र वज्रदत्त अब अर्जुन का सामना करने प्रचंड हाथी पर आरूढ़ होकर आगे आया। वह हाथी 'नगप्रख्य' (पर्वतसमान) था। महाभारतकार उसका यह और वर्णन देते हैं—

विक्षरन्तं महामेघं परवारणवारणम्

शारत्रवत् कल्पितं संख्ये विवशं युद्धदुर्मदम् ॥७५-१०॥

“मदस्राव करता हुआ वह विशाल (काले) मेघ समान प्रतीत होने वाला हाथी शत्रुपक्ष के हाथियों को वापिस भगाने में समर्थ था; उसे लड़ाई का यथोचित प्रशिक्षण दिया था, और वह (महावत) के अधीन युद्ध में भीषण आक्रमण करने वाला था”। फिर भी अर्जुन ने वज्रदत्त का पराभव किया।

यहाँ महत्त्व की बात यह कि, अब वहाँ से 'सिंधु' राज्य में प्रवेश कर गया, जहाँ अर्जुन की 'सैन्धव' योद्धाओं से लड़ाई हुई।

सैन्धवैरभवद् युद्धं ततस्तस्य किरीटिना ॥७७-१

‘तदनंतर अर्जुन का सिंधु राज्य के वीरों से युद्ध हुआ’। यह सिन्धु राज्य जयद्रथ का था यह भी महाभारतकार ने स्पष्ट कर दिया है—

तं स्मरन्तो वधं वीराः सिन्धुराजस्य चाहवे

जयद्रथस्य कौरव्य समरे सव्यसाविना ॥७७-११॥

‘कुरुनंदन (जनमेजय), (कुरुक्षेत्र पर) युद्ध में अर्जुन ने सिंधुराज जयद्रथ का किया वध स्मरण करने वाले वे (सिन्धु राज्य के) वीर’ (अर्जुन पर शर्वृष्टि करने लगे)। किन्तु जब अर्जुन उनको धराशायी करने लगा, तब जयद्रथ की विधवा पत्नी दुःशला (जो अर्जुन की चचेरी बहिन थी) अपना नाती साथ में लेकर रणभूमि पर आयी, और अर्जुन के सामने अश्रुपात करने लगी। अर्जुन ने उसका सान्त्वन कर लड़ना बंद किया।

वहाँ से घोड़ा मणिपुर आया।



‘हे पुरुषश्रेष्ठ (जनमेजय), इस क्रम से आगे बढ़ता हुआ वह अश्व अर्जुन के साथ मणिपुर नरेश के राज्य में आया। मणिपुर असम के नजदीक है। घोड़ा वहाँ से मगध और बाद में दक्षिण भारत गया।

इससे स्पष्ट है कि, जयद्रथ का सिंधु राज्य भारत के उत्तरपूर्व क्षेत्र में प्राज्योतिषपुर और मणिपुर के समीप, ब्रह्मदेश की सीमा पर, था। इस प्रकार वेंटर्स का अनुमान यथार्थ सिद्ध होता है! वहाँ प्रचंड लड़ने वाले हाथी युद्ध के लिये प्रशिक्षित किये जाते थे। विशाल ब्रह्मपुत्र नदी वहाँ से बहती थी; तथा पर्वतीय जंगलों से श्रेष्ठ ईमारती लकड़ी उपलब्ध होती थी। महाभारत इस तरह पूर्वभारत में स्थित इस दूसरे सिंधु राज्य के बारे में चीनी साहित्य की पुष्टि करता है।

फिर भी यहाँ महाभारत के वनपर्व की कुछ पंक्तियों पर ध्यान देना इष्ट होगा। अपने वनवास काल में पांडव काम्यक वन में थे, तब एक दिन द्रौपदी को पर्णकुटी पर अकेली छोड़कर वे जंगल में गये। उसी समय जयद्रथ लवाजमें के साथ उधर से जा रहा था। पर्णकुटी में द्रौपदी को अकेली देखकर वह उसके पास गया, तथा कुछ संवाद करने के बाद उसने उसका अपहरण कर लिया। किन्तु शीघ्र ही पांडव वन से वापिस लौटे, और जयद्रथ का पीछा कर उन्होंने द्रौपदी को मुक्त किया (वनपर्व अध्याय २६४ से २७२)।

इस प्रसंग के वर्णन में जयद्रथ को “सिंधूनां राजा” (२६४-६, ११), इतना ही नहीं अपितु “सौवीरराजः” (२६५-१२), तथा “पतिः सौवीरसिंधूनाम्” (२६७-८, १७) ऐसा भी संबोधित किया है। यह सौवीर राज्य निःसंदेह पश्चिम भारत में था। फिर, क्या उसी के साथ निर्दिष्ट जयद्रथ का सिंधू राज्य भी पश्चिम भारत में था? सौवीर के इस उल्लेख से कइयों की ऐसी धारणा हुई है। किन्तु फिर आश्वमेधिक पर्व में जयद्रथ का सिंधु राज्य पूर्व भारत में कैसे दर्शाया है?

महाभारतकार ने इसका समाधान एक सूक्ष्म संकेत द्वारा दिया है। जयद्रथ द्रौपदी के पास पहुँचने पर उसने प्रथम अपना दुष्ट हेतु व्यक्त न करते द्रौपदी से कुशल समाचार पूछा; जिसके उत्तर में द्रौपदी ने शिष्टाचारपूर्वक कहा-

अपि ते कुशलं राजन् राष्ट्रं कोषे बले तथा ॥२६७-१०

कचिद्वेदकः शिबीनाद्यान् सौवीरान् सहसिन्धुभिः

अनुतिष्ठसि धर्मेण ये चान्ये विजितास्त्वया ॥११

“राजा, आप राज्य, कोषालय एवं सेना के विषय में सुखी तो हैं? आपने जीते सिंधु सह सौवीर, शिबि, एवं अन्य भी प्रदेशों का शासन आप चिंतारहित एवं धर्मानुकूल करते तो

श्लोक ११ में निर्दिष्ट ‘सौवीर-सिन्धु’ पश्चिम भारत में होकर वे उसने ‘जीते थे’ (“विजिताः त्वया”)। उन्हें जीतने में उसे उसका शालक दुर्योधन - जो पूर्व एवं पश्चिम भारत के मध्य में हरिनापुर का सम्राट था - का साहाय्य हुआ होगा। किन्तु जयद्रथ का कुरुक्षेत्र युद्ध में वध होने पर, उसकी विधवा पत्नी दुःशला स्वाभाविक ही पूर्वभारत के अपने आनुवंशिक सिंधु राज्य में रहने लगी; तथा इसलिये वहाँ अश्वमेघ यज्ञ के अश्व के साथ आने वाला अर्जुन उसे मिला।

## जयद्रथ के सिंधु राज्य के बारे में भ्रम

फिर भी वनपर्व में उपरोक्त कथन में जयद्रथ को लेकर सिंधु के साथ सौवीर का वह उल्लेख देखकर, द्रौपदी के “विजितास्त्वया” शब्दों पर कुछ भी ध्यान न देते, यह भ्रम प्रसृत हो गया है कि, जयद्रथ का सिंधु राज्य पश्चिम भारत में ही था। पुणे की भांडारकर शोध संस्था द्वारा प्रकाशित ‘आश्वमेधिक पर्व’ के संपादक, उस भ्रम के अधीन, स्वयं ही कल्पना करते हैं कि, वह अश्व (और उसके साथ सेनासहित अर्जुन भी) पूर्वीय भारत के प्राज्योतिषपुर से सीधा सैकड़ों कोस दूर पश्चिम भारत में जयद्रथ के सिंधु राज्य को गया; और वहाँ से तुरन्त वही सुदीर्घ अंतर पार कर वापिस पूर्वभारत में मणिपुर आया, जहाँ से वह मगध एवं दक्षिण भारत गया। तथा अपनी ही इस कल्पना के आधार पर उक्त संपादक उस घोड़े का ऐसा उलट पुलट असंभव प्रयाग वर्णन करने के लिए महाभारत को दोष देते हुए व्यंग्य स्वरूप लिखते हैं,

“Then the horse entered the Saindhava country. It is a long way from Pragyotisa (the easternmost part) to the Sindhu region in the west. One would have expected the itinerary of the horse to be described more rationally, but as the horse was to be allowed to move freely, there is no room for any objection”. [‘इसके बाद घोड़े ने सैधव प्रदेश में प्रवेश किया। प्राज्योतिषपुर (पूर्व) तरफ अंतिम प्रदेश) से पश्चिम में सिंधु प्रदेश तक का मार्ग बहुत बहुत दूरी का है। घोड़े का भ्रमण अधिक युक्तिसंगत बनाना चाहिये था ऐसी हमारी अपेक्षा हो सकती है; किन्तु घोड़े को स्वतंत्रतापूर्वक भ्रमण की छूट देना थी, अतः ऐसी किसी आपत्ति को जगह नहीं’]।

किन्तु यह आलोचना निराधार है; क्योंकि जयद्रथ का मूल सिंधू राज्य पूर्वभारत में ही प्राज्योतिषपुर के निकट था।

इस पूर्वीय प्रदेश को ‘सिंधु’ क्यों कहते होंगे? इसका एक संभवनीय कारण यह प्रतीत होता है कि, हिमालय में ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम सिंधू के उद्गम के नजदीक ही है। शायद इस कारण प्राचीन काल में कल्पना थी कि, ब्रह्मपुत्र नदी सिंधू की ही एक



## ई-चिंग (T-Ising/I-ching) का वृत्तान्त

च्वांग के कथन की चर्चा करने में वेंटर्स (ऊपर उद्धृत) एक अन्य चीनी प्रवासी ई-चिंग का तुलनात्मक उल्लेख करते हैं, जिसने च्वांग के कुछ ही समय बाद ईसा की सातवीं सदी में भारत की यात्रा की थी। उसके प्रवास वर्णन का अंग्रेजी अनुवाद J. Takakusu ने "A Record of the Buddhist Religion as practised in India and the Malay Archipelago by I-Tsing" (Charendon Press, Oxford, 1896) इस शीर्षक से किया है।

ई-चिंग भारत को The West (Si-fang पश्चिम) कहते हैं; और लिखते हैं कि उसके कई नाम हैं, जिसमें एक 'आर्य देश' (A-li-ya-ti-sha) है, जिसका वे यह स्पष्टीकरण देते हैं,

"Arya Means 'noble', desa 'region', the Noble Region, a name for the West. It is so called because men of noble character appear there successively, and people all praise the land by that name". (उक्त P. 118) ['आर्य' यानी Noble (श्रेष्ठ, महान) देश यानी region; आर्य देश Noble region, यानी पश्चिम प्रदेश के लिये एक नाम। उसे यह नाम इस लिये दिया जाता है कि, वहाँ श्रेष्ठ चारित्र्य के व्यक्ति लगातार होते रहते हैं, और सब लोक उस देश की इस नाम द्वारा प्रशंसा करते हैं]। ई चिंग और आगे लिखते हैं "The northern tribes (Hu=Mongols or Turks) alone call the Noble Land 'Hindu', but this is not at all a common name. It is only a vernacular name, and has no special significance. The people of India do not often know this designation, and the most suitable name for India is the 'Noble Land'. Some say that Indu means the moon, and the Chinese name for India, i.e. Indu, is derived from it; although it may mean this, it is nevertheless, not the common name". ['केवल उत्तरी टोलियाँ (हू = मंगोल या तुर्क) इस आर्य देश को 'हिन्दू' कहते हैं, किन्तु निश्चित ही यह प्रचलित नाम नहीं। वह मात्र स्थानिक बोली में का एक नाम होकर, उसे खास महत्व नहीं। इंडिया के लोगों को यह नाम प्रायः मालुम नहीं होता है। कुछ कहते हैं कि, 'इंदु' का अर्थ चन्द्र है, और इंडिया के लिये चीनी नाम 'इंदु' उस शब्द से बना हुआ है; यद्यपि उसका यह अर्थ हो, फिर भी वह प्रचलित नाम नहीं']।

ब्रह्मपुत्र नदी के क्षेत्र को भी सिंधू नाम दिया होगा; यद्यपि कालान्तर से ये दो नदियाँ भिन्न हैं, यह ज्ञात हुआ होगा। कारण कुछ भी हो, प्राचीन भारत में 'सिन्धु' नाम के दो प्रदेश थे, इसमें संदेह नहीं:<sup>1</sup> जिसकी पुष्टि ऊपर उद्धृत भीष्मपर्व के श्लोकों से होती है।

☆ ☆ ☆

१. इसी प्रकार 'मालव' नाम के भी एक से अधिक प्रदेश थे, देखिये "Harsa and his Times", by Bajjanath Sharma, P. 140; एवं दो 'अवंती' राज्य थे, देखिये History and Culture of the Indian People. Vol. II. P. 13.



देश में 'श्रेष्ठ' व्यक्ति सतत पैदा होते हैं' इसका संबंध 'आर्य' संबोधन से लगाते हैं, वहाँ च्वांग उसका संबंध 'इंदु' से बताते हैं।

ई-चिंग को 'हिंदु' की 'इंदु' शब्द से व्युत्पत्ति ज्ञात नहीं हुई होगी, इसलिये वे कहते हैं कि 'हिन्दु' संबोधन का कोई खास आशय नहीं है। इसके अलावा जब वे कहते हैं कि, मात्र 'उत्तरीय जातियों' उस नाम का प्रयोग करती हैं, तब उन जातियों से वे कौन-से लोग दिग्दर्शित करते हैं, यह स्पष्ट नहीं।

ऊपर उद्धृत अंग्रेजी अनुवाद के अनुसार ई-चिंग का कहना था कि भारत के लोग 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग 'ज्यादातर (often)' नहीं करते थे; अर्थात् वह संबोधन इस देश की जनता में कम से कम 'कुद मात्रा में' प्रचलित था, ऐसा ई-चिंग ने देखा। फिर भी उनके अंग्रेजी अनुवादक अपनी "General Introduction" में वह 'often' शब्द हटाकर ई-चिंग को यह कहते उद्धृत करते हैं, "The people of India themselves do not know it" (the name Hindu) (स्वयं भारतीय लोग 'हिन्दु' संबोधन नहीं जानते)। नेहरू भी ई-चिंग को इसी गलत तरह उद्धृत करते हैं (पूर्व उल्लेखित, P.190); वस्तुतः नेहरू के अनुसार (ऊपर उद्धृत) करीब एक शताब्दी बाद 'हिन्दू' नाम एक संस्कृत रचना में आ गया था। फिर, जहाँ तक ई-चिंग के उक्त (often शब्द युक्त) कथन का भी सवाल है, उनके अनुवादक के अनुसार "The places which he says definitely he visited were very few"; अतः भारत की आम जनता के बारे में उनका व्यापक विधान विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता।

ई-चिंग कुछ स्पष्ट तथ्या गलत जानकारी भी देते हैं। वे कहते हैं कि, तिब्बत में बुद्धधर्म का प्रचार नहीं है (वही P.98); किन्तु उनके अनुवादक की टिप्पणी के अनुसार ई-चिंग के पूर्व च्वांग के समय भी तिब्बत में बुद्ध धर्म पहुँच गया था। इसी प्रकार ई-चिंग आर्य देश (भारत) के संदर्भ में कहते हैं कि उसे 'मध्यदेश' भी कहा जाता है, क्योंकि वह सैकड़ों देशों के बीच है (P.118)। किन्तु एक अन्य चीनी प्रवासी फा-हैन (जिन्होंने ईसा की पाँचवी सदी में भारत की यात्रा की थी) ने ठीक ही कहा है कि, 'मध्यदेश' नाम (पाली भाषा में 'मज्जिम देश') मध्यभारत क्षेत्र के लिये था, जो मथुरा के दक्षिण में है।

इसके अलावा, ई-चिंग के उक्त अंग्रेजी अनुवादक भारत के 'हिन्दु' नाम के बारे में प्रचलित धारणा के अधीन स्वयं लिखते हैं, "Hindu in Persian and Indo in Greek were perhaps corrupted from Sindhu"; जबकि स्वयं ई-चिंग ऐसा कुछ नहीं कहते। इसी प्रकार जहाँ च्वांग (ज्यूलियन ने दिये स्पष्टीकरण के अनुसार)

1. "A Record of Buddhist Kingdoms (Being an Account by the Chinese Monk Fa-Hien of his Travels in India and Ceylon)", translated and annotated by James Legge, P. 42.

व्यर्थ ही अपनी ओर से लिखते हैं' (देखिये General Introduction) कि, वह चीनी शब्द भी 'सिंधु' से बना है;<sup>9</sup> जबकि फा-हैन भी भारत को T'een (Thien)-chu संबोधित करते हैं, जो उनके अनुवादक के अनुसार 'सिंधु' से भिन्न है (पूर्वोक्त P.54)।

कुछ भी हो, महत्त्व की बात यह है कि, ई-चिंग जानते थे कि, 'इंदु', जिसका अर्थ चन्द्र है, से भारत का एक नाम संबद्ध है; तथा भारत के एक नाम का संबंध यहाँ पैदा होने वाले महान व्यक्तियों की सतत परंपरा से है; तथा यह भी कि, ई-चिंग 'हिन्दु' का संबंध 'सिंधु' से नहीं बताते।

## कुछ भारतीय विद्वानों का प्रतिपादन

अब तक स्पष्ट किये अनुसार, भारत के लिये प्राचीन चीनी शब्द मूलतः संस्कृत शब्द 'इंदु' था, जिसका अर्थ (रात्रिकालीन आकाश में सर्वश्रेष्ठ प्रकाश स्रोत) चन्द्र है। च्वांग इस नाम का यह और स्पष्टीकरण देते हैं कि, भारत उत्तर की ओर चौड़ा होकर दक्षिण को सकरा होने से कुल मिलाकर अर्धचन्द्राकार है। चीनी विद्वानों को यह जानकारी भारत से ही प्राप्त हुई होगी। भारत के उस आकार का उल्लेख जैन ग्रंथ जंबुदीवपण्णति में मिलता है।<sup>13</sup> जवाहरलाल नेहरू "Letters from a Father to his Daughter" पुस्तक में उल्लेख करते हैं कि आर्यावर्त (भारत) को उसके अर्धचन्द्राकार के कारण 'इंदु का देश' (इंदु देश) कहते थे। किन्तु वे इस संदर्भ में च्वांग का, तथा च्वांग ने 'इंदु' शब्द का दिया 'सर्वश्रेष्ठ' इस अर्थ का, उल्लेख नहीं करते। वस्तुतः ऊपर उद्धृत किये अनुसार उनकी मूल धारणा यही है कि, भारतीयों के 'हिन्दु' नाम का उद्गम मुख्यतः 'सिंधु' के ईरानी उच्चार में है।

सावरकर (पृ.उ. P.10) च्वांग का उल्लेख कर कहते हैं, "Even Huent-Sung who lived so long with us persists in calling us Shentus or Hientus". किन्तु च्वांग का आग्रह भारतीयों को 'शिन्तु' (सिंधु) या 'हिन्दु' कहने पर न होकर, ऊपर देखे अनुसार, मूल Intu (इंदु) नाम पर है; उसी से 'हिन्दू' शब्द बना। इसके विपरीत सावरकर कहते हैं कि 'इंदु' यह 'हिंदू' नाम को च्वांग ने दिया नया ही मजेदार आशय है।

1. इस से शंका होती है कि, भारत के नाम के विषय में ई-चिंग के कथन का ऊपर उद्धृत अंग्रेजी अनुवाद कहीं तक मूल चीनी लेखन के अनुसार है।

2. देखिये "India as described in early Texts of Buddhism and Jainism," by Bimal Churn Law, pp. 12-13.



interpretation put upon this epithet by the illustrious traveller Yuan Chwang.... when he indentifies our national name Hindu with the sanskrit INDU and says in justification that the world has rightly called this nation INDUs for they and their civilization had like the moon ever been a constant source of delight and refreshment to the languid and weary soul of man" (P.49) [‘श्रेष्ठ यात्री हुएन च्वांग ने इस संबोधन को दिया मजेदार अर्थ देखकर किसी भी हिंदू को स्वयं के प्रति अभिमान हुए बिना नहीं रहेगा। वे हमारे राष्ट्रीय नाम ‘हिन्दू’ को संस्कृत ‘इंदु’ से एकरूप बताकर उसके समर्थन में कहते हैं कि, दुनिया ने इस राष्ट्र के लोगों को ‘इंदु’ कहना उचित ही है, क्योंकि वे (यानी भारतीय) एवं उनकी (यानी भारतीयों की) संस्कृति मानव के उदास एवं त्रस्त अंतःकरण के लिये हमेशा चन्द्र समान प्रसन्नता एवं उत्साह का स्रोत रही है’]

किन्तु च्वांग का संकेत यह है कि, ‘इंदु’ नाम स्वयं भारतीयों ने अपने लिये धारण किया; न कि बाहरी दुनिया ने उन्हें दिया। ‘इंदु’ यह च्वांग ने ‘हिन्दू’ के लिये प्रस्तावित ‘एक मजेदार आशय’ नहीं था। बात यह है कि, हिन्दू नाम मूलतः ‘सिंधू’ से बना इस कल्पना का सावरकर पर भी गहरा प्रभाव न होता, तो उनका देशप्रेम से परिपूर्ण मानस ‘इंदु’ यह विदेशियों ने प्रस्तावित आशय नहीं कहता, तथा भारत के ‘हिन्दू’ नाम के लिये प्राचीन ईरानियों का अनावश्यक (एवं अपमानास्पद) आधार नहीं देता।

पु. ना. ओक ‘हिन्दु विश्वराष्ट्र का इतिहास’ (मराठी, पृष्ठ ६) में च्वांग का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि ‘हिन्दु’ यह शब्द सिंधु का अपभ्रंश न होकर इंदु शब्द का होगा ऐसा भी संभव है। क्योंकि उस इन्दु नाम का यूरोपीय अपभ्रंश India हुआ दीखता है। किन्तु इसके बाद ओक लिखते हैं, ‘चीनी यात्री हुएनसांग ने लिखा है कि, (भारत देश) तिन-चू के कई नाम हैं। शुरू में भारत को शितु एवं हिनऊ ऐसे नाम थे। किन्तु शुद्ध उच्चारण किया तो वह नाम असल में इन्तु ऐसा होना चाहिये। इन्तु देश के लोक अपने देश का कई प्रकार से उल्लेख करते हैं। चीनी भाषा में चन्द्र के अनेक नाम हैं। उनमें इन्दु यह एक है। वह अच्छा नाम है’ (पृ. ७)। श्री ओक ने यह Beal द्वारा किये अनुवाद पर से लिखा है, जिसमें ‘इंदु’ चीनी शब्द बताया है। किन्तु ऊपर बताये अनुसार वह मूलतः चीनी शब्द नहीं है, तथा च्वांग का भी वैसा कथन नहीं है।

सावरकर के समान ओक का भी मुख्य आक्षेप भारत के इस्लामी आक्रमकों पर होकर, भारत को ‘हिंदु’ नाम इस्लाम पूर्व ईरानियों ने (या चीनियों ने भी क्यों न हो) दिया हो इस धारणा का वे वैसा विरोध नहीं करते। बल्कि, ‘हिन्दु’ नाम भारतीयों पर इस्लामी आक्रमकों ने थोपा, इस कथन का तीव्र विरोध करने में वे वह नाम इस्लामपूर्व ईरानियों ने भारतीयों को दिया इस धारणा का आधार लेना चाहते हैं।

लोग कभी भी स्वीकार नहीं करते यह प्रतिपादन करते हुए, सातवलेकर लिखते हैं, (‘वैदिक धर्म’, हिन्दी मासिक पत्रिका, जुलाई १९२९ में ‘अहिंदु की शुद्धि’ शीर्षक लेख),

“...कई लोग यही समझते हैं कि विदेशी लोगों ने यह नाम हिन्दुओं को दिया। सिंधु शब्द का उच्चार विदेशी लोग न कर सके। वे सिंधु नदी को हिन्दु कहते थे, इसी से उन्होंने आर्य जाति को यह नाम दिया और आर्यों ने इसको स्वीकार किया। यह कल्पना ही अवास्तविक है। हिन्दू लोक अत्यन्त पुराणप्रिय हैं।.... ऐसे मनुष्य दूसरों का दिया हुआ नाम अपने को और अपने धर्म को लगावेंगे और यह परकीय शब्द कोने-कोने तक के हिन्दु को सहजप्रिय हो जाएं, यह तो असंभव है।...अतः वह शब्द अंतः प्रेरणा से ही उत्पन्न हुआ है। बाहर से आया हुआ शब्द हिन्दुओं का इतना जीवश्च कण्ठश्च प्रिय कदापि नहीं हो सकता....”

किन्तु भारतीयों के ‘हिन्दु’ नाम का (सिंधु से) विदेशी उद्भव इस तरह नकारने के बाद, सातवलेकर उसकी व्युत्पत्ति ‘मेरुतंत्र’ नाम की एक संस्कृत रचना की इस पंक्ति से बताते हैं, “हिसया दूयते यस्मात् हिन्दुरत्यभिधीयते” (जो हिंसा का त्याग करता है उसे हिन्दु कहते हैं)। मुझे यह व्युत्पत्ति ‘इंदु’ से संबद्ध व्युत्पत्ति की तुलना में कृत्रिम एवं बाद में किसी ने की कल्पना प्रतीत होती है।<sup>१</sup>

हिन्दू नाम सिंधु से बना, इस धारणा की पुष्टि में कुछ लेखक भारत के प्राचीन नाम के रूप में ‘सिन्धुस्थान’ शब्द प्रस्तुत कर सुझाते हैं कि, बाद में उसी का ‘हिन्दुस्थान’ रूपांतर हुआ। इस संबंध में ‘भविष्य पुराण’ नाम की संस्कृत रचना का आधार दिया जाता है। किन्तु उसमें स्पष्ट ही बाद में प्रविष्ट किये गये कई प्रक्षिप्त अंश होकर, भारत पर अंग्रेज सत्ता का भी उल्लेख है। उसके उपलब्ध पाठ को पार्गिटर<sup>२</sup> वितरनितज्ञ<sup>३</sup> एवं मिराशी<sup>४</sup> अविश्वसनीय मानते हैं। इसके अलावा इतने विशाल देश के मात्र एक कोने की

१. ‘हिन्दू’ शब्द की इसी प्रकार की कुछ अन्य भी कल्पनास्य व्युत्पत्ति :- “हिमालयात् समारभ्य यावद् इन्दु सरोवरम्। तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते” (बाहस्पत्य शास्त्र); “हीनं दूषयति इति हिन्दुः” (हीन कर्म त्यागता है वह हिन्दु) (शब्द कल्पद्रुम); “हिनोति सर्वदूषणि दुनोत्यन्यायपद्धतिभ। सर्वभूतरतो यस्तु सः हिन्दुः परिकर्तितः” (‘जो सब दुष्कर्म त्यागता है, अनैतिक कर्माचरण का विरोध करता है, सब प्राणियों का सुख चाहता है, उसे हिन्दु कहते हैं’).

२. "The Purana Text of the Dynasties of the Kali Age", Introduction, PP. vii-viii.

३. "History of Indian Literature", (English Translation), Vol. I, Part ii, P.497.

४. Article in "Journal of Indian History", Aug. & Sept. 1974.



## किसने किसे प्रभावित किया? -

भारतीयों के 'हिंदु' नाम का उद्गम इस्लामपूर्व ईरान में बताने वाले प्रायः दो शब्दों का आधार लेते हैं - धर्मग्रंथ अवेस्ता का 'हव्तिहिंदू' तथा दारियस के शिल्प लेखों में Hīdus/Hindus. इन ईरानी शब्दों का भारत से संबंध नहीं है, यह हमने ऊपर देखा है। किन्तु स्वयं ईरान में वे भारत के लिये प्रयुक्त थे ऐसा माना तो भी इस बात का कोई प्रमाण नहीं कि, इस्लामपूर्व ईरान का प्राचीन भारत पर इतना सांस्कृतिक प्रभाव या सैनिक दबाव था कि ईरानी वह 'हिन्दू' नाम भारतीयों को स्वयं के लिये स्वीकार करने प्रवृत्त या बाध्य कर सकते। बल्कि, (प्रकरण १ में कहे अनुसार) अपने पूर्वीय पड़ोसी देशों पर प्राचीन भारत के सांस्कृतिक प्रभाव के अलावा, पश्चिम में भी भारत की ही संस्कृत भाषा एवं साहित्य ने ईरान, अरबस्तान आदि को प्रभावित किया।<sup>१</sup>

यह स्पष्ट करते हुए एक अंग्रेज लेखक कहते हैं -<sup>२</sup>

"Indian numerals, arithmetic, mathematics, philosophy and logic, mysticism, ethics, statecraft, military science, medicine, pharmacology, toxicology (work on snakes 'sarpavidya' and poison 'visavidya'), veterinary science, eroticism, astronomy, astrology, and palmistry were transmitted. Chess and chauser games were brought from India. We have a reference by an Arabic author from Andalusia to an Indian book on tunes and melodies. Indian fables and literary works are reflected in the Thousand and one Nights..... To an appreciable extent, Sanskrit philosophy had already come to the attention of Sasanid Persians and its influence in the Islamic world was sometimes mediated by Sasanid schools. 'It was recognised among the Khusras (Akasira) of Persia that wisdom (hikma)

१. Max Muller लिखते हैं, 'What do we owe to the Persians? It does not seem to be much, for they were not a very inventive race, and what they knew, they had chiefly learnt from their neighbours, the Babyonians and Assyrians, ('India, what can it teach us?', Indian Edition P.17).

२. Andre Wink, 'Al-Hind, the making of the Indo-Islamic world' Vol. I, Leiden, The Netherlands, pp. 19-20।

I, P.160)। '[भारतीय संख्यांक, अंकगणित, गणितशास्त्र, दर्शनशास्त्र एवं तर्कशास्त्र, गृहविद्या, नीतिशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, शस्त्रविज्ञान, औषधी, औषधी निर्माण विद्या, (सर्व विधान विष विद्या), पशुचिकित्सा विद्या, कामशास्त्र, ग्रहज्योतिष, फलज्योतिष शास्त्र, हस्तेरेखाशास्त्र प्राप्त किये गये - बुद्धिबल एवं चौसर के खेल भारत से लाये गये। अंदलशिया के एक अरबी लेखक ने सूर एवं राग पर एक भारतीय पुस्तक का किया उल्लेख उपलब्ध है। भारतीय कला एवं साहित्य रचना 'एक हजार एक रातें' इस अरबी रचना में प्रतिबिंबित है.... उल्लेखनीय स्तर पर संस्कृत दर्शनशास्त्र से सानिद्र ईरानीयों की जानकारी में आ चुका था, तथा उसका प्रभाव इस्लामी दुनिया में कभी-कभी सेसानिड संप्रदायों के द्वारा होता था। 'ईरान के खुसरो (अकासिर) लोगों में यह मान्य था कि ज्ञान ('हिकम') मूलतः अल-हिंद से आया था' (Mas'udi, Muruj Adh-dhanah, I, P.160)।]

इस उद्धरण में, उन देशों को भारत से प्राप्त विविध विद्या एवं दर्शनशास्त्र आदि का उल्लेख करते हुए, ईरान के खुसरो लोगों का कथन प्रस्तुत किया है कि ज्ञान मूलतः अलहिंद (भारत) से आया था। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध रचना 'Arabian Nights' (usually known as 'One Thousand and One nights') की चर्चा करते हुए Encyclopedia Americana (Vol. 2p. 164) में कहा है, "Many of the stories are thought to be of Indian origin and to have undergone Persian transmission and remolding, both before and after the advent of the Islamic period in the 7th century A.D. "

['उसमें की कई कथा भारतीय मूल की होकर, ईसा की सातवीं सदी में इस्लामी कालखंड के हुए आरंभ के पूर्व एवं बाद ईरान पहुंचकर पुनर्रचित की गई मानी जाती है']।

भारत का इन पड़ोसी देशों पर यह सारा सांस्कृतिक प्रभाव देखते प्रश्न उठता है कि, क्या इस ज्ञान के साथ स्वयं भारत का अपना नाम भी इन देशों तक नहीं पहुंचा होगा? या इसके विपरीत, क्या वे देश भारत के लिये एक नया नाम तैयार करते, जिसे भारतीय पूर्णतः स्वीकार कर लेते? क्या उनमें एक तरह का बौद्धिक लेन देन हुआ था, जिसमें ईरान (एवं अरबस्तान) ने भारत से श्रेष्ठ ज्ञान आयात कर, बदले में भारत ने ईरान से स्वयं के लिये एक अतिरिक्त नाम 'हिन्दू' आयात किया? समग्र जागतिक सांस्कृतिक इतिहास में इतनी हास्यास्पद कल्पना शायद ही की गई हो।



पर राजा दारियस की तथाकथित विजय, जो थोड़े ही समय तक रही,<sup>1</sup> (यदि उस विनय की बात मान भी ली तो) उस प्रदेश पर भी शायद ही शाश्वत भाषिक प्रभाव छोड़ सकी हो, शेष विशाल भारत की तो बात ही अलग।

### विरोधी तर्क को अंतिम मोड़

भारतीयों को 'हिन्दू' नाम विदेशियों ने दिया कहने वाले अपने कुतर्क को एक अंतिम मोड़ का सहारा देना चाहते हैं। उनके अनुसार इस्लामपूर्व ईरानियों ने भारत को (सिंधु से) हिन्दु नाम दिया, किन्तु वह अपनी ही बोलचाल में रखा, और बाद में भारत पर आक्रमण करने वाले इस्लामी, ईरानी, अरब, तुर्क, इन्होंने वह नाम भारतीयों पर थोपा। पूर्व में उद्धृत ऐसे लेखकों के अलावा, इस प्रतिपादन के कुछ और उदाहरण प्रस्तुत हैं। Andre Wink (ऊपर उद्धृत) प्राचीन ईरान पर भारत का ही सांस्कृतिक प्रभाव मान्य करने के बावजूद लिखते हैं,

"In a political geographical sense, India or Al-Hind, throughout the Mediaval period, was an Arab or Muslim conception. The Arabs, like the Greeks, adopted a pre-existing Persian term but they were the first to extend its application to the entire Indianized region from Sind to Makran.... It therefore appears to us as if the Indians or Hindus acquired a collective identity in interaction with Islam" (Introduction, P.5); "There in no Sanskrit term by which 'Indians' or 'Hindus' defined their collective identity or the country where they lived, except, in the latter case, the concepts of Jambudvipa or Bharatavarsa, which are cosmological rather than geographical. The Muslims, as we have seen, by referring to India as al-Hind adopted a pre-existing Persian term, not a Sanskrit term..... The Persian usage of the term does not yet seem to have covered the entire Indian subcontinent..... The Arabs thus widened the application of the Persian term". (वही P. 190)।

1. मजुमदार के अनुसार दारियस का भारतीय प्रदेश पंजाब या सिंध में न होकर सिंधु के दूसरी ओर था; तथा उस पर ईरानी कब्जा दारियस के मृत्यु पश्चात चालू रहा ऐसा प्रतिपादन करने का कोई उचित प्रमाण नहीं है (देखिये Article in "Indian Historical Quarterly", XXV, pp. 163, 165; quoted in "The Cultural Heritage of India", Ramakrishna Mission Publication, Calcutta, Vol. I, P. 151).

थी। ग्रीकों के समान अरबों ने पहिले का ही एक ईरानी शब्द प्रयुक्त किया, किन्तु सबसे प्रथम उन्होंने उसका विस्तार सिंध से मकरान तक 'इंडियन' हुए संपूर्ण प्रदेश के लिये किया..... अतः हमारे विचार में इंडियन या हिन्दू लोगों का इस्लाम से संबंध आने से एक सामुदायिक पहचान प्राप्त हुई होगी।..... इंडियन या हिन्दू अपनी सामुदायिक विशिष्ट पहचान, या जहां वे रहते थे वह देश, संबोधित कर सके ऐसा (केवल देश के लिये जंबुद्वीप या भारतवर्ष ऐसी, और वे भी भौगोलिक के बजाय वैश्विक आशय की, धारणा छोड़कर) कुछ भी संस्कृत शब्द नहीं..... जैसा कि हमने देखा है, मुसलमानों ने इंडियन लोगों को अल-हिंद संबोधित करने में एक पहिले का ईरानी शब्द प्रयुक्त किया, संस्कृत शब्द नहीं..... उस शब्द का ईरानी प्रयोग तब तक संपूर्ण भारतीय उपखंड के लिये प्रसृत हुआ नहीं दीखता है..... इस प्रकार अरबों ने उस शब्द की व्याप्ती का विस्तार किया<sup>1</sup>।

इसमें कहा है कि, 'हिन्दुस्थान' यह मूलतः एक अरबी या मुसलमानी संकल्पना होकर, मुसलमानों ने भारत के लिये पहले से प्रयुक्त ईरानी शब्द 'हिन्दु', जो संस्कृत शब्द नहीं था, लिया और व्यापक रूप से उसे भारत के लिये प्रसारित किया। ऐसा ही भ्रामक कल्पना से अमेरिका के एक शब्दकोश में कहा है-

"Hindustan literally means the 'land of the Hindus'. A Persian and Urdu word first used by Muslim invaders, Hindustan in the past signified northern India. It is now applied to India as a whole...." ("Academic American Encyclopedia"). ["शाब्दिक अर्थ से 'हिन्दुस्तान' याने हिंदुओं का देश। मुसलमान आक्रमकों ने प्रथम प्रयुक्त किया यह ईरानी एवं उर्दु शब्द 'हिन्दुस्तान' पहिले उत्तर इंडिया दर्शाता था; अब वह समग्र भारत के लिये प्रयुक्त किया जाता है"]।

इसी प्रकार एक भारतीय ऐतिहासिक शब्दकोश में भी कहा है-

"Hindustan..... means 'the land of the Hindus'. It is a term that is used to indicate northern India from Peshawar to Assam and came into use after the conquest of northern India by the Muhammadans. Sometimes it is used in a wider sense to denote the whole of India" ("A Dictionary of India History", by S. Bhattacharya, George Brazillier, New York) ['हिन्दुस्तान' याने 'हिन्दुओं का देश'। यह शब्द पेशावर से असाम तक का उत्तर भारत दर्शाने प्रयुक्त किया जाता है, तथा मुसलमानों ने उत्तर भारत पर कब्जा करने बाद प्रचार में आया। कभी कभी वह व्यापक तरीके से समग्र भारत के लिये प्रयुक्त किया जाता है']।



खंडन आवश्यक है, जितना वह नाम भारतीयों के लिये इस्लामपूर्व ईरानियों ने तैयार किया, इस कल्पना का ।

### अल-बेरुनी का प्रमाण -

इस संबंध में इस्लामी विद्वान अल-बेरुनी की Kitab fi Tahqiq ma li' i-Hind रचना पर दृष्टिपात इष्ट है । वे उसमें भारत को 'हिन्द' तथा भारतीयों को 'हिन्दू' कहते हैं । अल-बेरुनी सुलतान महमूद गजनवी के समकालीन थे, जिसने उत्तर भारत पर कई बार आक्रमण किये ।

अल-बेरुनी हिन्दुओं को 'धार्मिक विरोधी' ("religious antagonists") कहते हैं<sup>१</sup>; तथा गर्व के साथ लिखते हैं -

"Mahmud utterly ruined the prosperity of the country, and performed there wonderful exploits, by which the Hindus became like atoms of dust scattered in all directions, and like a tale of old in the mouth of the people"<sup>२</sup> [महमूद ने इस देश का वैभव पूरा नष्ट किया, और वहाँ ऐसे आश्चर्यकारक पराक्रम किये, जिनसे हिंदु मिट्टी समान होकर सब दिशाओं में बिखर गये, तथा लोगों के कहने के लिये एक पुरानी कथा समान हो गये']

अल-बेरुनी का हिन्दुओं के प्रति यह दृष्टिकोण देखते, यदि 'हिन्दु' नाम ही मुसलमान आक्रमकों ने भारतीयों पर थोपा हुआ होता, तो अल-बेरुनी वैसा अवश्य लिखते; किन्तु उनकी रचना में इस तरह का कुछ भी संकेत नहीं ।

इसके अलावा, अल-बेरुनी ने हिन्दुओं को बड़े अभिमानी पाया । वे लिखते

हैं -

"The Hindus believe that there is no country but theirs, no nation like theirs, no religion like theirs, no science like theirs" (P.22).<sup>३</sup> [हिन्दुओं का विश्वास है कि उनके देश के समान अन्य देश नहीं, उनके राष्ट्र के समान राष्ट्र नहीं, उनके धर्म समान धर्म नहीं, उनके विज्ञान के समान विज्ञान नहीं] "They are haughty, foolishly vain, self-conceited" (P.22).

"All their fanaticism is directed against all foreigners. They

१. "Alberuni's India", by E. Sachau, Vol. I. P. 7.

२. उक्त P.22. किन्तु आखिर हिन्दुओं की ऐसी दशा नहीं हुई ।

३. अल-बेरुनी की मत्सरप्रेरित अतिशयोक्ति अलग रखी, तो मूलतः (ऊपर देखे अनुसार) भारतीयों का अपने देश एवं संस्कृति के प्रति अभिमानास्पद दृष्टिकोण चीनी लेखकों ने भी बताया है ।

interconnection with them... because thereby, they think, they would be polluted" (pp. 19-20). [वे क्रोधी, मूर्ख गरीबे दुर्भिमानी हैं। उनकी सारी धर्माधता के कारण वे सभी विदेशियों के विरुद्ध हैं; वे उन्हें स्लेच्छ यानी अशुद्ध कहते हैं, और उनसे किसी भी प्रकार का संपर्क निषिद्ध मानते हैं.... क्योंकि उससे वे अशुद्ध हो जायेंगे, ऐसा वे समझते हैं।]

अलबेरुनी जानते थे कि यद्यपि हिन्दुओं के इस्लामपूर्व ईरानियों से संबंध अच्छे नहीं थे, फिर भी हिन्दु मुसलमानों के प्रति विशेष विरोधी हैं । अलबेरुनी लिखते हैं -

(The Hindus had developed) "aversion towards the countries of khurasan. But then came Islam, the Persian empire perished, and the repugnance of the Hindus against foreigners increased more and more when the Muslims began to make their inroads into their country.... All these events planted a deeply rooted hatred in their hearts" (P.21). "They differ from us to such a degree.... as to declare our doings as the very opposit of all that is good and proper" (p. 20). [('हिन्दुओं के मन में) खुरासान के देशों के प्रति विरोधीभाव था; किन्तु बाद में इस्लाम आया, ईरानी साम्राज्य नष्ट हो गया, और जैसे-जैसे मुसलमानों ने हिन्दुओं के देश पर आक्रमण आरंभ किये, हिन्दुओं की विदेशियों विरुद्ध घृणा और बढ़ी... इन सब घटनाओं ने उनके मन में गहरा द्वेष निर्माण कर दिया'] 'वे (हिन्दू) हमसे इतने भिन्न हैं कि,.... वे हमारा आचरण पूर्णतया बुरा एवं अनुचित मानते हैं']

स्वयं अल-बेरुनी ने बतायी हिन्दुओं की इस मनोवृत्ति को ध्यान में लेते, यदि 'हिन्दु' नाम मुसलमानों का थोपा हुआ होता, तो भारत के विद्वान जिनसे अलबेरुनी मिले निश्चय ही उसका प्रतिवाद करते; तथा अल-बेरुनी उसका उल्लेख अपनी रचना में कर यह भी दर्शाते कि 'हिन्दू' स्वयं को किस प्रकार संबोधित करते हैं; यह इसलिये भी और आवश्यक था कि अवेस्ता के 'हप्ताहिंदु' शब्द का भारत से कोई संबंध नहीं, यह उन्होंने ही विशेष रूप से स्पष्ट किया है । अपनी रचना के आरंभ में ही वे कहते हैं कि 'वे उनके (हिन्दुओं के) स्वयं के शब्द पूरे विस्तार से उद्धृत करेंगे, जब वे किसी विषय के स्पष्टीकरण में सहायक हों' (P.7) । किन्तु इसके बावजूद, भारत के उनके ब्यौरेवार विवेचन में इसका संकेत नहीं दीखता कि, उन्हें भारत में मिले लोगों ने कभी भी 'हिन्दू' संबोधन पर आपत्ति की हो ।

अल-बेरुनी ने जिन रचनाओं की चर्चा की है उनमें सांख्य, पातंजलि, एवं ज्योतिषग्रंथ हैं; तथा वे कई बार भगवद्गीता उद्धृत करते हैं । ये रचनाएं पूरे भारत की थीं; तथा उनमें से कुछ का उन्होंने अरबी में अनुवाद किया । वे 'भारतवर्ष' नाम जानते



followers of a particular religion'. (पूर्व उद्धृत, P.63)। संभवतः नेहरू उस संस्कृत रचना 'मेरुतंत्र' का उल्लेख कर रहे हैं, जिसका सातवलेकर ने (ऊपर उद्धृत) आधार लिया है। और यद्यपि मैं उसमें दी 'हिन्दु' शब्द की व्युत्पत्ति से सहमत नहीं हूँ, वह इसका स्पष्ट प्रमाण है कि भारत में 'हिन्दू' नाम मुसलमान सत्ता के पूर्व से प्रचलित था (भले ही नेहरू 'मेरुतंत्र' का संदर्भ देते हों या अन्य किसी रचना का)।

अल-बेरुनी का ग्रंथ भारतीयों के 'हिन्दु' नाम के स्वदेशी उद्गम का प्रमाण देता है। धर्मांध मुसलमान आक्रमकों द्वारा भारतीय साहित्य के किये हुए पूर्ण विनाश के बाद जितना उपलब्ध होना संभव है उतना वह स्पष्ट प्रमाण है। बिहार में सुप्रसिद्ध नालंद विद्यापीठ सदियों से ज्ञान का भंडार था; तथा ईसा की सातवीं सदी में कनोज के राजा हर्षवर्धन का उसे आश्रय था। युरेन च्वांग ने वहाँ काफी समय बिताया था; और उन्होंने वहाँ, इस देश के नाम की 'इंदु' से व्युत्पत्ति, जिसका वे अपने लेख में स्पष्ट उल्लेख करते हैं, बताने वाली रचनाएँ देखी होगी। उस संस्था का विशाल ग्रंथ भंडार मुस्लिम आक्रमकों ने जलाकर भस्म कर दिया, तथा वहाँ के विद्वानों के सिर काट दिए।<sup>1</sup> एक बौद्ध विद्वान् भारत पर हुए इस्लामी आक्रमण के विषय में लिखते हैं,

"The fanatic invaders destroyed not only their political and military enemies, but all people and institutions of all faiths. All the shrines, monasteries and schools were burnt and destroyed." ("Thai Buddhism in the Buddhist World" by Phra Rajavaramuni, PP. 44-45). [धर्मांध आक्रमकों ने न केवल राजनैतिक एवं सैनिक शत्रुओं का, अपितु अन्य धर्मों की आम जनता एवं धार्मिक संस्थाओं का भी विनाश कर डाला; सब मंदिर, मठ एवं विद्यालय जलाकर नष्ट कर दिये।]

किन्तु यह सब अलग रखा तो भी, एक ऐसे राष्ट्र को, जो हजारों कोस फैला है, जिसकी जनसंख्या करोड़ों में है, जिसके अपने नाम है, तथा जिसकी सांस्कृतिक विरासत अनैतिहासिक अतीत तक पहुँचती है, विदेशियों ने दिया एक अतिरिक्त नाम स्वीकारने को बाध्य करने, किसी विदेशी सत्ता के लिये वस्तुतः एक अतिप्रचंड, असंभव कार्य होता।

सच तो यह है कि, ('सिंधु' से बना) प्राचीन ईरानी शब्द 'हेण्डू' या 'हिण्डू' जिसका अर्थ मात्र एक नदी या समुद्र था, और भारतीयों ने स्वयं को प्रयुक्त (संस्कृत 'इंदु' से तैयार हुआ) 'हिन्दु' संबोधन, इसमें नादसाग्न्य के कारण घोटाला न किया होता, तो स्वाभिमानी, सुसंस्कृत, स्वतंत्र भारतीयों पर आक्रमक विदेशियों ने एक नया नाम थोपने की असंभव कल्पना ही गंभीरता से कभी व्यक्त नहीं की जाती। अल-

1. ...A.L. Basham, पूर्व उल्लेखित, P. 268.

अवंती (उज्जैन), मथुरा आदि प्रदेशों का निर्देश करते हैं (P.298)। विस्मयजनक ब्योरे के साथ वे भारत के पुराण, पंचांग, तिथिगणना, दिन, मास एवं वर्ष का विवेचन करते हैं। वे 'महुरा' (मथुरा), जौन (यमुना), गंगाद्वार (गंगा का उद्गम स्रोत), तथा मध्य भारत के धार एवं उज्जैन शहरों का (PP.202-203), तथा और दक्षिण को 'मराठा देश' का (P. 203), एवं भारत के दक्षिण सिरे पर स्थित 'रामेश्वर' का भी (उसके राम से संबंध सहित) उल्लेख करते हैं (PP-208-209)। वे हिन्दुओं की विभिन्न लेखन-सामग्री की जानकारी भी देते हैं (P.171)। इसी प्रकार वे काश्मीर, वाराणसी, मध्यप्रदेश, मालव, और सिंध में प्रचलित वर्णाक्षरलेखन की भी माहिती देते हैं (P.173)।

भारत का ऐसा विस्तृत वर्णन 'हिन्द' के 'हिन्दुओं' से निकट सम्पर्क बिना संभव नहीं था। अलबेरुनी स्वयं लिखते हैं कि, वे भारतीय विद्वानों से विभिन्न स्तरों पर, और कभी-कभी तो "in the relation of a pupil to his master" (Vol. 1 P.28, शिष्य गुरु के पास जाता है वैसे) मिले; तथा 'जहाँ कहीं भी संस्कृत ग्रंथ होना संभव था वहाँ से प्राप्त करने में, तथा उन ग्रंथों के ज्ञाता एवं मुझे सिखाने वाले हिन्दू विद्वान, सुदूर स्थानों से भी, मेरे लिये उपलब्ध करने में, मैंने न परिश्रम में और न पैसों में कोई कमी की' (उक्त P.24)। उनके लिखने का पूरा ढंग ही यह है कि, वे अपने देश-बांधवों को पड़ोसी विशाल देश के भूगोल एवं संस्कृति का विस्तार से परिचय कराना चाहते थे, और वह उस देश के लोगों से एवं साहित्य से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करने के बाद। अल-बेरुनी अपना विस्तृत विवरण इन शब्दों के साथ समाप्त करते हैं, "We think now that what we have related in this book will be sufficient for anyone who wants to converse with the Hindus, and to discuss with them questions of religion, science, or literature, on the very basis of their own civilization. (Vo. II, P.246)। ('हमे अब ऐसा लगता है कि, हमने इस पुस्तक में जो कहा है वह, जो हिन्दुओं से संवाद करना चाहता है, तथा स्वयं उनकी संस्कृति के आधार पर उनसे धर्म, विज्ञान अथवा साहित्य के विषय में उनसे चर्चा करना चाहता है, ऐसे किसी के भी लिये पर्याप्त होगा')। किन्तु, उनका यह उद्देश्य ही विफल हो जाता, तथा भारत के स्वाभिमानी विद्वान ऐसे किसी विदेशी से जो उन्हें 'हिन्दू' संबोधित करे, सार्थक सांस्कृतिक चर्चा नहीं करते - यदि वह 'हिन्दू' नाम भारतीयों पर उसी विदेशी के सहधर्मी इस्लामी (या इस्लामपूर्व भी) विदेशियों ने थोपा हुआ होता।

स्पष्ट है कि भारतीयों का 'हिन्दु' नाम भारत में ही तैयार होकर, अल बेरुनी के समय तक लोकप्रिय हो गया था। उस नाम के संदर्भ में नेहरू लिखते हैं, "The first reference to it in an Indian book is, I am told, in a tantric work



"The Arabs in Sindh and the neighbouring Hindu princes of the Gujara-Pratihara dynasty were at war with each other. Unlike them, the southern princes, the Ballabhras (Vallabhras) of the Rastrakuta dynasty (who in turn were fighting the northern Hindu princes) encouraged Arab merchants and travellers to settle in their territories". ("The Wonder that was India", Vol II, by S.A.A. Rizvi, Introduction, P.xxvii)। [सिंध में आये अरब और पड़ोस के गुर्जर-प्रतिहार वंशी हिंदू राजा इनमें परस्पर युद्ध होते रहता था। इसके विपरीत, दक्षिण के राष्ट्रकूट वंशी बल्लार (बल्लभराज) (जो उत्तर के हिंदू राजाओं से लड़ते रहते थे) अरब व्यापारी एवं प्रवासीओं को अपने प्रदेश में बसने प्रोत्साहन देते थे']।

इस प्रकार जिन्हें सिंध के एक भाग में भारतीयों का सामना करना पड़ा था, तथा दूसरे भाग में भारतीयों ने मित्रता युक्त प्रवेश दिया, वे अरब सिंध के निवासियों पर क्या एक नया नाम थोप सकते थे?

इसके बाद उत्तर भारत पर आक्रमण करने वाले मुसलमानों का विचार करें। केवल लूट मार के लिये हमले करने वाले महमूद गजनवी को तो अलग रखिये, महमूद घुरी भी इस देश पर कोई सत्ता कायम नहीं छोड़ सका। मजुमदार के अनुसार, 'मुहम्मद घुरी की जीत के बाद भारत में विभिन्न वंशों के अधीन मुस्लिम साम्राज्य स्थापन हुआ यह प्रचलित धारणा वस्तुस्थिति के विपरीत है। भारत का बहुतांश क्षेत्र ईसा की तेरहवीं सदी के करीब अंत तक मुसलमानी प्रभुत्व से मुक्त रहा'।<sup>१</sup> इसके पश्चात् चौदहवीं सदी के बाद जब भारत में छः शक्तिशाली राज्य स्थापन हुए, तब भी 'उनमें से तीन-दक्षिण में बहामनी राज्य, पश्चिम में गुजरात एवं पूर्व में बंगाल-पर मुसलमानों की सत्ता रही, जबकि उनके प्रतिस्पर्धी एवं पड़ोसी-दक्षिण भारत में विजय नगर, राजपुताना में मेवाड़ तथा पूर्वीय समुद्रतट पर ओरिसा-इन पर हिन्दुओं की सत्ता थी' (देखिये वही)।

Andre Wink भी (ऊपर उद्धृत) The Indians or Hindus acquired a collective identity in interaction with Islam" ऐसा कहते हुए भी मान्य करते हैं कि "Hindu or Buddhist India was not conquered until the thirteenth century and parts of it remained outside the Muslim control until as late as the sixteenth century" (पूर्व उल्लिखित, P.17)। [हिन्दू या बौद्ध भारत तेरहवीं शताब्दी तक जीता नहीं गया था, तथा उसके कुछ भाग

१. "History and Culture of the Indian People". Vol vi, Preface by R.C. Majumdar.

शिवाजी की सत्ता उदित होकर, कालांतर में उसकी शाखाएं विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुई।

इस तरह इस दीर्घ कालखंड में भी मुसलमान-सत्ता के लिये भारत की आम जनता पर एक नया नाम थोपना संभव नहीं था। वस्तुतः 'हिन्दु' नाम भारतीयों द्वारा पहले से ही अपनाया हुआ था; तथा उसी का प्रयोग मुसलमान सत्ताधीशों ने भारतीयों को संबोधित करने में किया।

## भाषिक रूपांतरित शब्द -

भारत की आम जनवाणी में 'इंदु' का 'हिन्दू' रूपान्तर सहज एवं स्वाभाविक ही था। इस प्रकार के उच्चारान्तर के कुछ और उदाहरण प्रस्तुत हैं।

संस्कृत शब्द 'इच्छा' से प्राकृत में 'हिच्छा' हुआ है। 'उमंग' से 'हुमंगना' (जो से आगे बढ़ना), तथा 'उल्लास' से 'हुल्लास' हुआ है। संस्कृत 'ओष्ठ' हिन्दी में 'होंठ' हुआ है। 'एक' से राजस्थानी में 'हेकला' एवं पंजाबी में 'हेकटा' शब्द हुआ है। संस्कृत 'ईर्षा' का हिन्दी रूपांतर हिसिषा, हिसिखा या हिसा है।

भारत के बाहर के भी कुछ ऐसे उदाहरण देखिये -

ENCYCLOPAEDIA BRITANNICA :- 'Adrai' (a town) = Hadria. "Adrian" (Roman Emperor, also catholic Pope) = Hadrain. 'Aleppo' (City in Syria) = Halep. 'Alleelula' = Hallelujah. 'Ormizd'=1 Hormizd, 'Ormuz' = Hormuz.

'इंदु' के इस तरह 'हिन्दू' रूपांतर के समान उसी का Indo (Indiaca, India) उच्चार भी स्वाभाविक प्रतीत होगा। इसमें आरंभिक 'ह' हटाने की बात आवश्यक नहीं रहती। यदि ग्रीकों ने भारत का नाम ईरानी उच्चार के 'हिन्दू' से लिया होता, तो क्या वे अपने शब्द में भी 'ह' (H) नहीं रख सकते थे? उनके कुछ शब्द उस अक्षर से आरंभ होते हैं, जैसे Hades, Hadrianus, Hercules (Heracles), Hebrabrukl.

फिर भी, तर्क किया जाता है कि, <sup>१</sup> ग्रीक लोगों में 'आयोनियन' जाति की बोलभाषा में 'ह' उच्चार नहीं था, तथा उन्होंने ईरानी 'हिन्दू' शब्द का रूपांतर Indos किया। किन्तु क्या यह निश्चित है कि ग्रीकों में वे आयोनियन लोक ही थे जिनका भारत से सर्वप्रथम परिचय हुआ?<sup>२</sup> और क्या यह भी निश्चित है कि, ग्रीकों के भारतीयों से प्राचीन काल से व्यापारी एवं सांस्कृतिक संबंध होते हुए भी आयोनियनों को भारत का

१. देखिये H.G. Rawlinson, पृ. उ. P. 20.

२. या, आयोनियन जाति का यह उल्लेख Indo शब्द ईरानी Hidus/Hindus से हुआ इस पूर्वग्रहयुक्त कल्पना की पुष्टि करने हेतु मात्र पश्चात्-तर्क तो नहीं?



विद्वान् ईसापूर्व पाँचवी एवं छठी सदी में भारतीय चिंतन ग्रीस तक पहुँचने की चर्चा करते हुए लिखते हैं, (Edward Urwick, "The Message of Plato")-

"I Certainly do assume a fairly direct contact between India and Greece, Just as I assume that the influence was profoundly felt by Plato" (Preface, P. viii); "Every one of the doctrines which we know formed the 'gospel' of Pythagorus and of the Pythagorean brotherhood of Crotona, was an almost exact reproduction of the cardinal doctrines of the Indian Vidya and the India Yoga" (pp. 13-14) ['भारत एवं ग्रीस में काफी प्रत्यक्ष संबंध ऐसा में अवश्य मानता हूँ, तथा यह भी मानता हूँ कि प्लेटो पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा था... पायथॅगोरस एवं क्रोटोना के पायथॅगोरियन संघ के प्रतिपादन का हमें ज्ञात हर सिद्धान्त, भारतीय विद्या एवं भारतीय योग शास्त्र के प्रमुख सिद्धान्तों का करीब-करीब हू-ब-हू पुनर्कथन था']।

जिस प्रकार ग्रीकों ने भारतीयों के 'यमुना' (Jobannes), सिंधू (Sindus), 'हिरण्यबाहु' (Errannobas) 'प्राच्य' (Prasii/Praisioi), चन्द्रगुप्त (Sandrokottos), आदि शब्द ज्ञात किये, वैसा ही इस देश का 'इंदु' नाम Indos के रूप में ज्ञात किया।

यद्यपि ग्रीक इस देश को Indos कहते थे, उनमें से कुछ जानते थे कि उसके पश्चिम तरफ की विशाल नदी का नाम Sindus (Sinthus) है, और उन्हें इन दो शब्दों के अंतर पर कुछ 'आश्चर्य' भी होता था।<sup>1</sup> ऐसा प्रतीत होता है कि, कालान्तर में Sindus का उच्चार (Indos के अनुरूप) Indus होने लगा। किन्तु कुछ ग्रीक लेखक, जो Indos की 'इंदु' से, तथा Indus की Sindus से व्युत्पत्ति नहीं जानते थे, सोचने लगे कि भारत का Indos नाम Indus नदी के नाम से हुआ है। इस दृष्टि से Diodorus Siculus (ईसा पूर्व प्रथम शताब्दि) लिखते हैं, "..... The river Indus from which the country takes its name"<sup>2</sup> तथा Arrian (ईसा की द्वितीय शताब्दि) भी कहते हैं, "..... The rivers of India are certainly the largest to be found in all Asia. The mightiest are the Ganges and the Indus, from which the country receives the name".<sup>3</sup>

1. Rawlinson, P. 20.

2. देखिये R.C. Majumdar, "Classical accounts of India", P.230.

3. वही P. 216

भारत के हिन्दुस्तान नाम में 'हिन्दु' शब्द के अलावा, 'स्थान' भी शुद्ध संस्कृत शब्द है। प्राचीन भारतवर्ष में कनोज के उत्तर में 'स्थानेश्वर' नाम का एक प्रसिद्ध शहर भी था।<sup>1</sup> अल-बेरुनी, संस्कृत विद्वान उत्पल को उद्धृत कर कहते हैं कि 'मुलतान' का शुरू नाम 'मूलस्थान' था।<sup>2</sup> फिर भी कुछ लेखक 'हिन्दुस्थान' को 'हिन्दुस्तान' लिखकर प्रतिपादन करते हैं कि, इस शब्द का उत्तरार्ध भी (अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि के समान) ईरानी (या उर्दू) है।

प्राचीन अवेस्ता भाषा में 'हिन्दू' के ऊपर उद्धृत अर्थ के अलावा, आधुनिक ईरानी भाषा में उसके कुछ अर्थ ये हैं An Indian; black; servant; slave; an infidel; a watchman; [भारतीय; काला, नोकर, गुलाम, काफिर; पहरेदार]; तथा Hinduzada का अर्थ है, 'of low or obscure birth' ("Persian-English Dictionary" by Johnson and Richardson)।

भारत का मूल धर्म 'वैदिक' कहलाता था, तथा देश को 'इंदु' (हिन्दू) यह एक अतिरिक्त नाम था। किन्तु कालप्रवाह में वेदों के अतिरिक्त स्मृतिग्रंथ, पुराण, रामायण एवं महाभारत महाकाव्य आदि साहित्य निर्माण होकर, वेदों में निर्दिष्ट देवताओं के अलावा अन्य देवताओं की भी पूजा-भक्ति प्रचारित हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि, तब बहुसंख्यक जनता के धर्म को 'हिन्दू' यह लोकप्रिय नाम प्राप्त हुआ; जबकि वह नाम भारत देश के लिये भी चालू रहा। उस धर्म का 'वैदिक' के बजाय 'हिन्दू' नाम प्रचलित होने से, वह धर्म और बौद्ध, जैन आदि धर्म, जिनका उद्देश वेदों का प्रामाण्य नकारना था, इनके बीच का कुछ प्राथमिक विरोधी भाव शान्त करने में भी सहायता हुई।

भारत को प्राप्त एक नाम इस रूप में 'इंदु' शब्द पर अभी तक बहुत कम चिंतन हुआ है; इस दृष्टि से उपलब्ध संस्कृत, पाली आदि साहित्य का पुनरावलोकन आवश्यक है। इसी प्रकार ब्रह्मदेश (मायमार), सयाम (थाइलैंड), कंबोडिया (कंबोज), तिब्बत, नेपाल आदि पड़ोसी देशों के प्राचीन साहित्य का भी विशेष अध्ययन इस विषय पर अधिक प्रकाश डाल सकेगा। प्राचीन भारतीय साहित्य इन देशों में काफी मात्रा में पहुँचा था यह दर्शाते हुए नेहरू लिखते हैं,

"During the political revolutions from the eleventh century A.D. onward, crowds of Buddhist monks, carrying bundles of manuscripts, went to Nepal or crossed the Himalayas into

1. देखिये Sachau, पू. उ. Vol. I. P. 199; Watters पू. उ. Vol. I. Chapter 10; Beal पू. उ. Vol. I. pp. 215-16.

2. देखिये Sachu Vol. I. P. 298.



previously, found its way to China and Tibet, and in recent years it has been discovered afresh there in the originals or, more frequently, in translations. Many Indian classics have been preserved in Chinese and Tibetan translations relating not only to Buddhism but also to Brahmanism, astronomy, mathematics, medicine, etc". ("The Discovery of India", P. 191)

ऐसे साहित्य से भारतीय विद्वानों का परिचय फिलहाल मुख्यतः पश्चिमी विद्वानों द्वारा किये अनुवादों द्वारा होता है। ये अनुवादक (जो उनके परिश्रम के लिये निःसंदेह धन्यवाद के पात्र हैं) जहाँ मूल रचना में भारत का किसी भी नाम से निर्देश आता है वहाँ प्रायः India/Indica/Inde लिख देते हैं, जिससे यहाँ बताई विशेष भाषिक व्युत्पत्ति स्पष्ट नहीं होती है। ऐसे साहित्य से भारत के विद्वानों का प्रत्यक्ष परिचय आवश्यक है।

☆☆☆

(उल्लेखित लेखन एवं लेखक)

'अथर्व वेद'	८
उत्पल (संस्कृत विद्वान)	५९
'ऋग्वेद'	१, १९, २८
ओक, पु. ना. 'हिंदु विश्वराष्ट्र या इतिहास' (मराठी)	४६
कालिदास	१४, १७
'जंबेदीवपणत्ति' (जैन ग्रंथ)	४५
ज्ञानी, शिवदत्त, 'भारतीय संस्कृति'	२
'झेंद अवेस्ता' (देखिये Zend Avesta)	२
'निघंटु कोश'	८
वार्हस्पत्य शास्त्र	४७
ब्रह्मसिद्धान्त	२८
'बृहदारण्यक उपनिषद्'	१४
'भविष्य पुराण'	४७
'भारतीय संस्कृति कोश', (मराठी)	३
मल्लीनाथ	१७
'महाभारत'	१४, १७, १८, ३८, ४१
मिराशी, वा. वि.	४७
मुकजी, राधाकुमुद	२
'मेरुतंत्र',	४७, ५५
'विष्णुपुराण'	१८
'वेदिवाद' (देखिये Zend Avesta)	४७
शब्द कल्पद्रुम	१९
शर्मा, आचार्य श्रीराम	१९



Ilya Gershevitch "The Avestan Hymn to Mithra"

Jackson, A.V.W. "Cambridge History of India"

Johnson and Richardson, "Persian-English Dictionary"

Kent Roland

Kotwal, Firoze M.

Law Bimal Churn, "India as described in early Texts etc",  
Majumdar, R.C.

Max Muller, "India, What can it teach us?"

Nehru, Jawaharal, - "Discovery of India",

"Letters from a Father to his Daughter"

Olmstead, A.T. "History of the Persian Empire"

Oxford English Dictionary

Pargiter, F.E. "The Purana Text etc"

Rajavarmuni, Phra, "Thai Buddhism in the Buddhist World"

Rawlinson, H.G. 'Intercourse between India

and the Western World"

Rizvi. S.A.A. "The Wonder that was India", Vol. II.

Sachu E. (see also Al-Beruni)

Savarkar, "The Essentials of Hindutva"

Sharma, Baijanath, "Harsa and his Times"

Sharma B.R.

"Study of Indian History and Culture" (Vol.I.)

Sylvain Levi,

Takakusu

Tavadia, J.C. "Indo-Iranian Studies"

Thieme, Paul,

Urwick, Edward, "The Message of Plato",

Ved Mehta, "A Portrait of India".

Veronice Garbutt, II



Indo-Islamic world"	४८, ५०, ५६
Winternitz, (Eng. Trans, "History of Indian Literature")	४७
"World University Encyclopedia",	४
Yuan Chwang (Hsuan-Tsang), 'Account of his travels in India'	९-१८, ४५, ४६, ५५
-Trans, by S. Beal, "Buddist Records of the Western world"	९, १०, ११, १२, १६
Trans, by M. Julien,	९-१६, ४४
Trans, by Watters, "On Yuan Chwang's Travels in India",	९-१८, ३६
"Zend Avesta"	२, ३, ४, १९-३०, ३४
- Trans by Geldner	२४
- Edited by Wasterguard	२३, २४
- Trans by Darmesteter	२१, २२, २४, २५, २६
- Edited by M. Haug	२२, २३, २४
- Trans by Ilya gershevitch	२६
- Trans by Mills	२७
- Trans by Spiegel	२९

☆☆☆